CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

7.2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

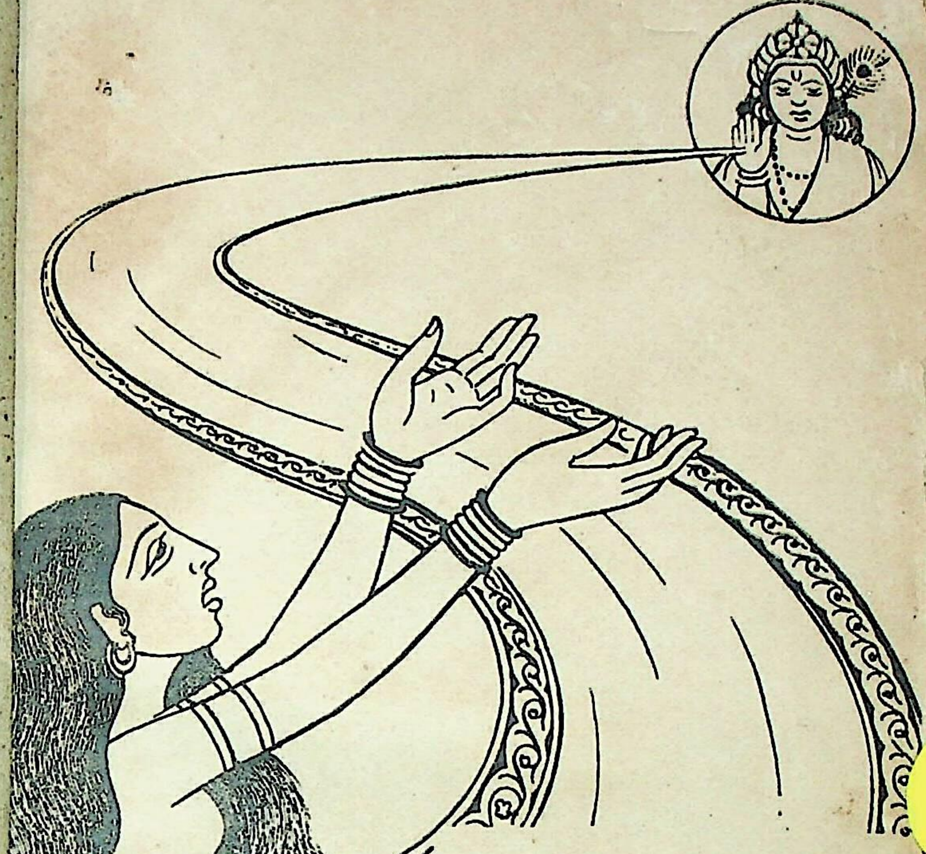

द्रौपदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्रौपदी

चन्द्रशेखर मिश्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक — चन्द्रशेखर मिश्र
अस्सी, वाराणसी

कवि — चन्द्रशेखर मिश्र

आवरण — वेद

प्रथम संस्करण : १९८२

मूल्य — २५ रुपये

मुद्रक—विद्या प्रिंटिंग वर्क्स
भदैनी, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पण

कवि हृदय स्व० विजय कुमार साह की
पुण्य स्नेहिल स्मृति को

—चन्द्रशेखर मिश्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करउँ प्रणाम जोरि जुग पानी

कथा वही पुरानी है, महाभारत की। कथा क्या, ऐसी व्यथा है जो तब से लेकर अब तक पुरुष जाति पर एक धब्बा बनी हुई है। धर्मराज युधिष्ठिर जैसा उस युग (द्वापर) का महान् व्यक्ति अपनी अकेले की नहीं पाँच भाइयों की साझे की पत्नी द्रौपदी को जुए में हार जाता है। भरी सभा में दुर्योधन के आदेश से, कर्ण की सम्मति से, यहाँ तक कि धृतराष्ट्र के मौन से दुशासन उसको वस्त्र विहीन करना चाहता है। उस सभा में जहाँ परिवार के वयोवृद्ध तथा देश-देशान्तर के माने जाने लोग उपस्थित हैं; भला कोई तो दुशासन के उस कुकृत्य का विरोध करता ! जैसे सारी सभा को लकवा मार गया था या सब इसके लिए राजी थे।

हाँ सौ कौरवों में से एक 'विकर्ण' विरोध की आवाज उठाता है किन्तु उसे कर्ण द्वारा दबोच दिया जाता है। केवल कृष्ण का ही व्यक्तित्व काम आता है। जब पितामह भीष्म, श्वसुर धृतराष्ट्र, चाचा विदुर, गुरु द्रोणाचार्य,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृपाचार्य तथा गुरुपुत्र अश्वत्थामा जैसे महारथी और रिश्ते में बहुत ही समीप-वर्ती लोग मौन हो इस दृश्य के द्रष्टा बने हैं, तो अकेले कृष्ण किस नाते द्रौपदी की लाज बचाते हैं, यह बात मेरे मन को बहुत मथ रही थी।

संयोग की ही बात कहिये कि इसी बीच लोहियाजी की एक पुस्तिका पढ़ने को मिल गयी। वे लिखते हैं—"कृष्ण-कृष्णा के सम्बन्ध में कुछ वह मर्द-औरत वाला प्रेम रहा हो, यह बहुत ही खींच-तान करके महाभारत के आख्यानों श्लोक से साबित कर सकते हैं वरना मेरे जैसा आदमी कहेगा कि वह केवल **सखा-सखी** का सम्बन्ध है और ऐसा कि जिसमें शारीरिक प्रेमवाला कोई भी अंश न रहा होगा। द्रौपदी बड़ी गजब की औरत थी। वह कोई डरपोक औरत न थी। सारे संसार के इतिहास में, वांग्मय में, किंवदन्ती में आपको कोई एक और ऐसा सम्बन्ध नहीं मिलेगा, यह सखा-सखी सम्बन्ध है। इसमें भाई-बहन का भी सम्बन्ध है, इसमें प्रेमी-प्रेमिका का भी सम्बन्ध है, इसमें माँ-बेटे का तो कहना गलत होगा, कुछ बाप-बेटी का अंश हो तो हो। शायद माँ-बेटे का भी कह सकते हो। एक माने में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि जितने भी सम्बन्ध हैं सबका इसमें समावेश है। एक माने में यह कहना सही होगा कि माँ-बेटे, बाप-बेटे, भाई-बहन, प्रेमी-प्रेमिका सब सम्बन्धों को यदि किसी तरह से जोड़ दो फिर कोई उसका निचोड़ निकालो तो वह सखा-सखी वाला सम्बन्ध होगा। सखा-सखी का सम्बन्ध बहुत ही मुश्किल है, लेकिन इस रिश्ते को पढ़कर लगता है बहुत अच्छा है। वह दिल को दुनिया और समाज को बहुत ही एक बनाने वाला सम्बन्ध है।"

"द्रौपदी या सावित्री" पृष्ठ सं० १३
समाजवादी प्रकाशन, वाराणसी

लोहिया जी ने अंत में जो निर्णय इस सम्बन्ध के सम्बन्ध में दिया है वह इतना महान है कि साधारण व्यक्ति तो यह सोच ही नहीं सकता। और सब पर तो नहीं किन्तु **प्रेमी-प्रेमिका** वाले सम्बन्ध पर मुझे एक बात कहनी है और वह यह कि द्रौपदी का जब स्वयंवर होता है, उस समय देश-देशान्तर के चुने हुए वीर राजकुमार वहाँ एकत्र होते हैं। ब्राह्मण वेश में छिपे हुए पाण्डव भी वहाँ उपस्थित हैं और दुर्योधन तथा कर्ण भी। स्वयं कृष्ण भी बलराम के साथ वहाँ बैठे हैं। क्षत्रियों में से कोई भी स्वयंवर में निर्धारित लक्ष्य को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेध नहीं पाता। तब ब्राह्मण वेशधारी अर्जुन ब्राह्मणों की ओर से खड़े होते हैं।

यदा निवृत्ता राजानो धनुषः सज्यकर्मणः।
अथोदतिष्ठद् विप्राणां मध्याज्जिष्णुरुदाराधीः ॥

[जब सब राजाओं ने उस धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाने के कार्य से मुँह मोड़ लिया तब उदार बुद्धि अर्जुन ब्राह्मण मंडली के बीच से उठकर खड़े हुए।]

क्या इसके पूर्व कृष्ण नहीं खड़े हो सकते थे ? क्या कृष्ण जैसा योद्धा उस लक्ष्य को नहीं वेध सकता था ? कृष्ण का द्रौपदी को प्राप्त करने के लिए किसी प्रकार की चेष्टा न करना इस बात का अपने आप में अकाट्य प्रमाण है कि उनके मन में द्रौपदी के प्रति प्रेमिका वाला भाव उठा ही नहीं था जबकि द्रौपदी वहाँ पूर्ण शृङ्गार किये उपस्थित थी। कृष्ण तो अर्जुन की इस महान सफलता पर प्रसन्न होते हैं। वे अपनी प्रसन्नता अपने बड़े भाई बलराम से उस समय व्यक्त कर देते हैं जब पराजित अन्य राजकुमार अर्जुन को मारने के लिए तैयार होते हैं।

यथा नृपाः पाण्डवमाजिमध्ये त प्रब्रवीच्चक्रधरो हलायुधम्।
बलं विजानन् पुरुषोत्तमस्तदा न कार्यमार्येण च सम्भ्रमस्त्वया ॥
भीमानुजो योधयितुं समर्थ एकोहि पार्थः ससुरासुरान् बहून्।
अलं विजेतुं किमु मानुषान् नृपान् साहाय्यमस्मान् यदि सव्यसाची ॥
स वाञ्छति स्म प्रयताम वीर पराभवः पाण्डुसुते न यास्ति ॥

[राजा लोग रण-भूमि में पाण्डुपुत्र के प्रति अपना क्रोध जैसे प्रकट कर रहे थे, उसे सुनकर अर्जुन के बल को जानते हुए चक्रधारी पुरुषोत्तम भगवान कृष्ण ने बलराम जी से कहा—"भैया ! आपको घबराना नहीं चाहिए। यदि बहुत से देवता और असुर एकत्र हो जायँ तो भी भीम के छोटे भाई कुन्ती कुमार अर्जुन उन सबके साथ अकेले ही युद्ध करने में समर्थ हैं। फिर इन मानव भूपालों पर विजय पाना कौन बड़ी बात है। यदि अर्जुन हमारी सहायता लेना चाहेंगे तो हम इसके लिए प्रयत्न करेंगे। वीरवर ! मेरा विश्वास है कि पाण्डुपुत्र अर्जुन की पराजय नहीं हो सकती।]

कृष्ण इस अवसर पर अर्जुन की सहायता के लिए भी तैयार हैं। इससे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कृष्ण के मन में द्रौपदी के प्रति वह भाव कभी उठा ही नहीं जिसकी ओर लोहियाजी ने संकेत किया है।

काम्यक वन में जब कृष्ण पाण्डवों से मिलने के लिये जाते हैं। तब द्रौपदी कृष्ण से कहती है—

चतुर्भिः कारणैः कृष्णत्वया रक्ष्यास्मि नित्यशः।
सम्बन्धाद गौरवात् सख्यात् प्रभुत्वेनैव केशव ॥ (१२७) वनपर्व

[श्री कृष्ण ! चार कारणों से सदा आपको मेरी रक्षा करनी चाहिए। एक तो आप मेरे सम्बन्धी हैं, दूसरे अग्निकुण्ड से उत्पन्न होने के कारण मैं गौरव-शालिनी हूँ, तीसरे आपकी सच्ची सखी हूँ और चौथे आप मेरी रक्षा करने में समर्थ हैं।]

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य 'महाभारत-कथा' में लिखते हैं—

"इस प्रकार करुण स्वर में विलाप करती हुई द्रौपदी को श्री कृष्ण ने बहुत समझाया और धीरज बँधाया। वे बोले **बहन द्रौपदी** ! जिन्होंने तुम्हारा अपमान किया है, उन सब की लाशें युद्ध मैदान में खून से लथपथ होकर पड़ेंगी। तुम शोक न करो। मैं वचन देता हूँ कि पाण्डवों की हर प्रकार से सहायता करूँगा।"

'महाभारत-कथा' पृष्ठ १२५
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली

आधुनिक कवि श्री नरेन्द्र शर्मा अपने "द्रौपदी" खण्ड काव्य में लिखते हैं—

आनन्द पुलक आह्लाद,
दिव्य उन्माद देह मनवाणी !
द्रौपदी जीवनी शक्ति,
पंचतत्वों की वह कल्याणी !

योगेश्वर की वह बहन,
योगिनी शक्ति कर्म की तृष्णा !
पंचाग्नि शक्ति साकार,
व्योम-अवतार-कारिणी कृष्णा !

(पृष्ठ ३०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरे ही मन में नहीं, मेरे पूर्व और कई लोगों के मन में यह प्रश्न उठ चुका है कि द्रौपदी और कृष्ण में कौन-सा सम्बन्ध था। जिसके कुछ प्रमाण ऊपर दिये गये हैं। मैंने यह काव्य लोकभाषा (भोजपुरी) में लिखा है। अतः जिस बात को कहना चाहा है वह सब लोक सन्दर्भ एवं लोक जीवन पर ही आधारित है। थोड़ी देर के लिए ऊपर की सारी बातों को छोड़ दें और अब साधारण बात पर विचार करें।

लोक जीवन में एक पुरुष की दो पत्नियों (जो आपस में सवतें होती हैं) में से एक का भाई दूसरे का भी भाई माना जाता है। यह बात सभी जानते हैं कि द्रौपदी और सुभद्रा दोनों ही अर्जुन की पत्नियाँ थीं और कृष्ण सुभद्रा के भाई थे। ऐसी स्थिति में वे द्रौपदी के भी भाई हुए।

एक कल्पना और करें—सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु कृष्ण को मातुल कहता था और वे मातुल थे भी। जिस तरह वह सुभद्रा को माँ कहता था उसी तरह द्रौपदी को भी माँ ही कहता था। द्रौपदी के पाँचों पुत्र जिस तरह द्रौपदी को माँ कहते थे उसी तरह सुभद्रा को भी। निश्चित है कि ये भी कृष्ण को मामा ही कहते रहे होंगे।

ये सब बातें इस तथ्य को मानने के लिए पर्याप्त हैं कि कृष्ण द्रौपदी के भाई थे और द्रौपदी कृष्ण की बहन। इस बात से नकारा नहीं जा सकता कि द्रौपदी अपने युग की सर्वाधिक असाधारण नारी थी और कृष्ण असाधारण पुरुष। वह कृष्ण हैं तो वह कृष्णा। पाण्डवों के जीवन में जब द्रौपदी का प्रवेश होता है तब से लेकर अन्त तक सारे पुरुष समाज के लिये एक विकट समस्या के रूप में बनी रह जाती है। उसे जितना भरोसा और विश्वास अपने भाई पर था उतना अपने पाँचों पतियों पर भी नहीं था। उसका सब कुछ एक ऐसा अनन्त है जिसे केवल उसके भाई (कृष्ण) ने ही समझा। पूरे कुरु कुल की परिधि उसकी महानता में पता नहीं कहाँ खो जाती है। जबकि उस कुटुम्ब में एक-से-एक दिग्गज पड़े हुए हैं।

मेरी द्रौपदी एक ओर जहाँ महान नारी है वहीं दूसरी ओर लोक जीवन की साधारण स्त्री भी है। हमारे गावों में आज भी सम्बन्धों का यह संस्कार जीवित है। पूरे गाँव की नारी पूरे गाँव की यथायोग्य चाची, माँ, बहन इत्यादि होती है। सम्बन्धों की यह दुनिया, कितनी आदर्शमय है, इसे सोचकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही मन पवित्र हो जाता है। आज जबकि पूरा समाज गाँव से नगर की ओर भागा जा रहा है, इन पवित्र सम्बन्धों में शिथिलता आने लगी है। यदि यह काव्य भाई-बहन के पवित्र सम्बन्ध में थोड़ी भी दृढ़ता दे सका तो यह मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी। जब तक यह काव्य पढ़ा जाय कम से कम तब तक मन में यह धारणा बनी रहे कि द्रौपदी और कृष्ण में भाई-बहन का रिश्ता था। तभी काव्य का आनन्द आयेगा।

महाभारत में दुखी द्रौपदी का आर्तनाद सुनकर कृष्ण द्वारिका से पैदल ही चल पड़ते हैं। किन्तु घटनास्थल पर वस्त्र रूप में हो जाते हैं, उन्हें स्पष्ट रूप से कोई देख नहीं पाता।

याज्ञसेन्या वचः श्रुत्वा कृष्णो गह्वरितोऽभवत्।
त्यक्त्वा शय्याऽऽसनं पद्भ्यां कृपालुः कृपयाऽभ्यगात् ॥४५॥

कृष्णं च विष्णुं च हरिं नरं च
त्राणाय विक्रोशति याज्ञसेनी।
ततस्तु धर्मोऽन्तरितो महात्मा
समावृणोद् वै विविधैः सुवस्त्रैः ॥४६॥ सभापर्व

[द्रुपदनन्दिनी की वह करुण पुकार सुनकर कृपालु कृष्ण गद्गद हो गये तथा शैय्या और आसन छोड़कर दया से द्रवित हो पैदल ही दौड़ पड़े। कृष्णा अपनी रक्षा के लिये श्री कृष्ण, विष्णु, हरि और नर आदि भगवन्नामों को जोर-जोर से पुकार रही थी। इसी समय धर्मस्वरूप महात्मा श्री कृष्ण ने अव्यक्त रूप से उसके वस्त्र में प्रवेश करके भाँति-भाँति के वस्त्रों द्वारा द्रौपदी को आच्छादित कर लिया।]

महाभारत में व्यास जी ने यह तो कहा कि कृष्ण पैदल ही दौड़ पड़े किन्तु यह नहीं कहा कि सभा में सशरीर उपस्थित हुए। हाँ अव्यक्त रूप से उसके वस्त्र में प्रवेश करने की बात कही गयी है। इस काव्य में कृष्ण अव्यक्त नहीं अपितु पूर्ण रूपेण व्यक्त हैं। ऐसा इसलिए कहा गया है कि किसी भी कथा में परिवर्तन करने का अधिकार या तो पूर्व के कवियों ने स्वयं ले लिया है या उन्हें दे दिया गया है। प्रमाण के लिए हम अपने सर्वोच्च कवि प्रातः स्मरणीय गोस्वामी तुलसीदास द्वारा किये गये परिवर्तन को चर्चा करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामचरित मानस में धनुष यज्ञ के प्रसंग में जब रामचन्द्र धनुष को तोड़ देते हैं तब उसके पश्चात् परशुराम का आगमन होता है—

तेहि अवसर सुनि सिव धनु भंगा।
आयउ भृगुकुल कमल पतंगा॥

किन्तु जानकी मंगल में यह बात नहीं है। वहाँ की कथा कुछ और ही है। परशुराम जनक के यहाँ आते ही नहीं बल्कि राम से उस समय पथ में मिल जाते हैं जब वे सीता के साथ अयोध्या को जाने लगते हैं।

पंथ मिले भृगुनाथ हाथ फरसा लिए।
डाटहिं आँखि देखाइ कोह दारुन किए॥
राम कीन्ह परितोष रोष रिस परिहरि।
चले सौंपि सारंग सुफल लोचन करि॥

कवि भी एक है और कथा भी एक है। केवल काव्य पृथक हैं, किन्तु दोनों में दो प्रकार की बातें हैं। बाल्मीकि रामायण, जिसे हम आदि काव्य कहते हैं, में भी परशुराम के आगमन की कथा बारात की विदाई के पश्चात ही है—

ऋषीन् सर्वान् पुरस्कृत्य जगाम सबलानुगः
गच्छन्तं तु नरव्याघ्र सर्षिसंघं सराघवम्
घोरास्तु पक्षिणो वाचो व्याहरन्ति समन्ततः
भौमाश्चैव मृगाः सर्वे गच्छन्ति स्य प्रदक्षिणम्।

*　　　*　　　*

ददर्श भीमसंकाशं जटामण्डल धारिणम
भार्गवं जामदग्नेयं राजा राज विमर्दनम्

उस समय ऋषि समूह तथा रामचन्द्र जी के साथ यात्रा करते हुये पुरुष सिंह महाराज दशरथ के चारों ओर भयंकर बोली बोलने वाले पक्षी चहचहाने लगे और भूमि पर विचरने वाले समस्त मृग उन्हें दाहिने रख कर चगने लगे।

*　　　*　　　*

उस समय राजा दशरथ ने देखा—राजाओं का मान मर्दन करने वाले जटाजूट धारी भयानक भृगुकुल यमदग्नि कुमार सामने से चले आ रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारे यहाँ पाठान्तर की तो बहुत ही पुरानी परम्परा है। इसी आधार पर इस काव्य में कृष्ण अव्यक्त न होकर व्यक्त हैं। महाभारत हमारे लिए इतिहास अथवा काव्य के साथ ही एक महान धर्मग्रन्थ भी है। धर्मग्रंथ की किसी कथा में अपने मन से कुछ करना कहीं शास्त्र विरोधी अथवा अनुचित तो नहीं होगा, ऐसा सोचकर एकबार मैंने इस काव्य को आदि से लेकर लगभग (लगभग इसलिए कि तब तक रचना पूरी नहीं हुई थी) अन्त तक पूज्य स्वामी करपात्री जी को सुनाया था और द्रौपदी तथा कृष्ण के भाई-बहन वाले सम्बन्ध के बारे में भी उनसे निर्णय माँगा था। स्वामी जी तो बहुत ही भावुक थे। छन्द सुन-सुनकर भाव विभोर हो जाते थे। उन्होंने कई लोगों के समक्ष कहा था 'तुमने कोई अनुचित कार्य नहीं किया है।' काव्य यथाशीघ्र पूरा करो। उसके पश्चात् मैं निश्चिन्त हो गया और उनके इस कथन से मेरा उत्साह बढ़ा था, इसमें संदेह नहीं।

जहाँ तक मेरी रचना-क्षमता है उसके अनुसार अब यह काव्य पूरा है। मैंने इसे अपनी मातृभाषा भोजपुरी में लिखा है। भोजपुरी अभी कुछ ही वर्षों से खुल कर रचना प्रक्रिया में आयी है। इसके पूर्व मैंने 'कुँवर सिंह' महाकाव्य की रचना की। साहित्य जगत ने जो सम्मान दिया उससे मेरा उत्साहवर्द्धन हुआ जिसके चलते इस काव्य की भी रचना हुई। वैसे कवि सम्मेलनों के माध्यम से इस काव्य को प्रकाशन के पूर्व ही इतनी ख्याति प्राप्त हो चुकी है जितनी बहुत से काव्यों को छपने के बाद भी नहीं मिल पाती। काव्य की रचना आठ वर्षों मै जैसे-जैसे अवकाश मिला है, की गयी है। अब तक यह श्रोताओं तक था, अब पाठकों तक भी पहुँचेगा। मेरे लिए यह संतोष की बात है क्योंकि मेरे श्रोता यह पूछते-पूछते तथा लिखते-लिखते ऊब चुके हैं कि 'आपकी द्रौपदी कब तक छपेगी ?' लगभग ५०० पत्र और २०० काव्य प्रेमियों के अग्रिम मूल्य मेरे पास पड़े हैं। उन सबका ऋण अब मेरे ऊपर से उतर जायेगा। इसका श्रेय मेरे मित्र श्री जगदीश अरोड़ा को ही जायेगा। मेरे भाग्य में शायद विधाता ने यह लिख दिया है कि कविता तो तुम लिखोगे किन्तु बाकी व्यवस्था इसी व्यक्ति के माध्यम से होगी। 'कुँवर सिंह' महाकाव्य को उन्होंने ही प्रकाशित कराया था। "द्रौपदी" को प्रकाशित करने के लिए उन्होंने मेरा आग्रह मेरे स्वर्गीय मित्र भाई विजय कुमार साह के अनुज एवं काशी के लब्ध प्रतिष्ठ उद्योगपति श्री चन्द्र कुमार साह के सम्मुख रखा जिसे उन्होंने सहज ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहर्ष स्वीकार कर लिया। विजय भाई ने द्रौपदी के अंशों को अपने जीवनकाल में सुना था। उनकी इच्छा इसके शीघ्र प्रकाशन की थी। उनका इच्छा उनके भाई पूरी कर रहे हैं। दोनों का मुझ पर यह चिरऋण रहेगा।

मेरे अनेक शुभचिन्तकों की सद्भावनायें इस काव्य के साथ जुड़ी हुई हैं। कितने ही विद्वानों, काव्य प्रेमियों तथा कवि मित्रों का स्नेह ही कहिये कि द्रौपदी अब साहित्य जगत को सौंपी जा रही है। आदरणीय ए० के० अग्रवाल (अध्यक्ष हिंडालको) की कृपा को तो मैं भूल ही नहीं सकता। उनके साहित्य प्रेम ने सदैव मुझे बल दिया है। जहाँ मेरे प्रथम पुत्र श्रीप्रकाश मिश्र ने इसे मुद्रित किया वहीं द्वितीय पुत्र वेद प्रकाश ने अपनी चित्रकला से इसे सजाने का कार्य किया। अनुज जगदीश चन्द्र मिश्र तथा पुत्रवत डॉ० जय प्रकाश मिश्र, अग्रज नवलखा प्रसाद मिश्र तथा अनुज विश्वविख्यात योगिराज राजवली मिश्र ने अनेक बार संशोधनात्मक सुझाव दिया है। इस सन्दर्भ में एक बार फिर वड़े भइया स्व० पं० राम लखन मिश्र की याद आ जाती है। मेरा कवि जीवन उनकी ही कृपा का परिणाम है। मैं 'कुँवर सिंह महाकाव्य" में भी यह बात कह चुका हूँ और यहाँ भी इसे दोहरा रहा हूँ कि यदि आज भी उनकी छाया होती तो निश्चित ही इस काव्य का रूप कुछ और होता। वे जहाँ भी हों मेरा प्रणाम स्वीकार करें। चि० राकेश ने प्रूफ संशोधन का कार्य किया और धर्म प्रकाश मिश्र ने भूमिका भाग को लिपि वद्ध किया है। मैं इन सबसे पूर्ण संतुष्ट हूँ और यदि भगवान की कृपा से ऐसी ही पारिवारिक स्थिति बनी रही तो हो सकता है आगे चलकर और भी किसी काव्य की रचना सम्भव हो सकेगी।

आदरणीय पं० श्यामनारायण पांडेय, राम नारायण दादा (सम्पादक–जयदेश) पं० धरीक्षण मिश्र, प्राचार्य डा० विश्वनाथ सिंह (सम्पादक भोजपुरी अकादमी पत्रिका), हवलदार त्रिपाठी, सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी, डा० जितराम पाठक, पं० विद्या निवास मिश्र, भाई ठाकुर प्रसाद सिंह, श्री शिव मंगल सिंह 'सुमन', 'विप्र' जी, काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर', पं० रूप नारायण त्रिपाठी, डा० श्रीपाल सिंह 'क्षेम' डा० शम्भुनाथ सिंह, डा० त्रिभुवन सिंह, डा० विजयपाल सिंह, डा० हरिहर नाथ त्रिपाठी, श्री वीरभद्र मिश्र, शालिग्राम उपाध्याय, राम विनायक सिंह, चन्द्रदेव सिंह, गुलाब जी, वासुदेव सिंह, श्री नर्मदेश्वर उपाध्याय, उमाकान्त मालवीय, केशवचन्द्र वर्मा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुक्ति भद्र दीक्षित, जैसे शुभ चिन्तकों द्वारा प्राप्त प्रोत्साहन का परिणाम आज उनके समक्ष है।

मित्र श्री दान बहादुर सिंह, 'सुँड़' फैजाबादी, 'विकल' साकेती, हरिश्चन्द्र गुप्त, राधेश्याम गुप्त, भारत भूषण, सोम ठाकुर, पारस भ्रमर, डा० ब्रजेन्द्र अवस्थी के स्नेह ने मुझे इसकी रचना में बड़ा बल दिया है। मैं इन सबका आभारी हूँ।

अनुज अजय शेखर, कृष्ण तिवारी, डा० विश्वनाथ, अवध बिहारी उपाध्याय (व्यास), हरिराम द्विवेदी, अभयनाथ तिवारी, बुद्धिनाथ मिश्र, चकाचक बनारसी, साँड़ बनारसी, शिवलोचन, एकलव्य, ब्रजनाथ, मनमौजी, कैलाश गौतम, मुनीरबख्श आलम, चंचल जौनपुरी, जगदीश 'पंथी' बागी आदि ने आदरपूर्वक इस काव्य को सराहा है। मैं इन सबका कृतज्ञ हूँ।

अपने उन सहस्त्रों श्रोताओं को जिन्होंने कवि सम्मेलनों में इस काव्य के छन्दों को बार-बार सुनाने का आग्रह किया है, आदेश दिया है—साधुवाद देता हूँ, पाठकों से भी निवेदन करता हूँ कि मेरी त्रुटियों को भूलकर इसे स्नेह पूर्वक पढ़ें और मुझे आशीर्वाद दें जिससे मेरी रचना क्षमता पूर्ववत बनी रहे। अन्त में मैं सबको यह वचन देकर अपनी बात समाप्त करता हूँ कि शीघ्र ही अन्य काव्य के प्रणयन का पूर्ण प्रयास करूँगा।

ज्येष्ठ पूर्णिमा १९८२ चन्द्रशेखर मिश्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माई रे……… !

तू दुरगा बनि के अइलू,
तोहरे बल बीर चलावत भाला ।
माई सरस्वती तू बनलू,
तोहरी किरपा कविता बनि जाला ।
आठ भुजा नभ चुंबी धुजा,
नहिं मैहर में सिढ़िया चढ़ि जाला ।
राउर ऊँचि अदालत बा,
बदरा जहँ से रचिकइ रहि जाला ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाहीं ढोवात अन्हार क भार बा,
ताकत बाटे ढोवाइ न देते।
झंखत बाटी अँजोर बदे,
दियरी, दियरी से छुवाइ न देते।
भोर समै पछतइबे अकेलइ,
राह अन्हारे देखाइ न देते।
बाती अकेलि कहाँ ले जरइ?
तनिका भरि नेह चुआइ न देते।

देखले कबउँ न बाटी पढ़ले जरूर बाटी,
सुनीले कि रिखि-मुनि झूँठ नाहीं बोललें।
बरम्हा, बिसुन औ महेंस तीनिउँ मोहि गइले,
माई तोर बीन कौन - कौन सुर खोललें?
द्रौपदी बेचारी बाटै, खाली एक सारी बाटै,
ऊहो न बचत बाटै बैरी मिलि छोरलें।
अस गाढ़ समय में देखब तोहार हंस,
हाली-हाली उड़लें कि धीरे-धीरे डोललें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना लुटिहैं द्रौपदी कतहूँ,
मतवा भेजबू जउ धोती एहीं से।
रोज तू सूरुज बोवलू खेत में,
रोजइ भेजलू जोती एहीं से।
माई रे तोरे असीसन के बल,
पाइब छन्द क मोती एहीं से।
बाटै हमैं विसवास बड़ा,
निहचै निकले रस सोती एहीं से।

ढोंग कविताई क रचाइ गैल बाटै तब,
छोड़ि के दुआरि तोर बोलु कहाँ जाई रे!
भाव नाहीं, भाषा नाहीं, छन्द रस-बोध नाहीं,
कलम न बाटै, नाहीं बाटै रोसनाई रे!
कौरव-सभा में जात द्रौपदी क लाज बाटै,
गाढ़े में परलि बाटै मोरि कविताई रे!
हियरा लगाइ तनी अँचरा ओढ़ाइ लेते,
लड़िका रोवत बा उठाइ लेते माई रे...!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्रौपदी

ओहि दिन पुरहर[1] राष्ट्र धृतराष्ट्र भैल[2],
भागि में विधाता जाने काउ[3] रचि गइलें।
नाउँ त धरमराज, नाहीं बा[4] सरम लाज,
हाइ राम लाज क जहाज पचि गइलें।
ठाट-बाट हारि गइलें, राज-पाट हारि गइलें,
आगे अब काउ हारें, काउ बचि गइलें।
अंत जब द्रौपदी के दाँउ पर धइ[5] देलें,
अनरथ देखि हहकार मचि गइलें।

---

१. समूचा। २. हो गया। ३. क्या। ४. है। ५. रख दिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाहीं ढेर[1] बड़ि बाटै, नाहीं ढेर छोटि बाटै,
नाहीं ढेर मोटि बाटै, नाहीं ढेर पतरी।
छोट-छोट दाँत बाटै, मोती-जोति मात बाटै,
तनी-मनी[2] गोरि बाटै ढेर-ढेर सँवरी।
बड़-बड़ बाल बाटै, गोल-गोल गाल बाटै,
गोड़ लाल-लाल बाटै, लाल-लाल अंगुरी।
बड़े-बड़े नैन वाली, मीठे-मीठे बैन वाली,
द्रौपदी जुआरिन के दाँउ पर बा धरी।

भरी-भरी माँग बाटै, लोहित लोहांग[3] बाटै,
करिया[4] पहाड़ प किरिनि लाल उतरी।
भौंह घनी-घनी तर, पलक-बरौनी तर,
पिंजरा में बड़ी-बड़ी पुतरी कबुतरी।
मोतिन क लर बाटै, लर लागि नथिया बा,
नथिया में नाक जस कँटिया में मछरी।
गोलकी कलाई वाली, हाथन भलाई वाली,
द्रौपदी जुआरिन के दाँउ पर बा धरी।

---

१. अधिक २. थोड़ी-थोड़ी ३. रक्त रंजित लोहास्त्र ४. काला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जवनी[1] की खातिर स्वयम्बर महान भैल,
बड़-बड़ बनहाँ[2] न बेधि पउलें मछरी।
आहत भयल केउ बेदी से गिरल, नाहीं-
धनुहीं झुकलि न चढ़ाइ पउलें रसरी[3]।
जवन कि पृषत कुमार राजा द्रुपद क-
बिटिया न रहलि, रहलि ऊँचि पगरी।
बाप क पियारी, महतारी क दुलारी उहै,
द्रौपदी जुआरिन के दाँउ पर बा धरी।

१. जिसकी। २. धनुर्विद्या में कुशल। ३. डोरी।

ततस्तु ते राजगणाः क्रमेण
कृष्णा निमित्तं कृत विक्रमाश्च
सकर्ण दुर्योधन शाल्व शल्यः
द्रौणाय निक्राथ सुनीथ वक्राः
कलिंग वंगाधिप पांड्य पौण्ड्राः
विदेह राजो पवनाधिपश्च
अन्ये च नाना नृप पुत्र पौत्राः
राष्ट्राधिपा पंकज पत्र नेत्राः→

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्रुपद के मख बीच जेकरे स्वयंबर में,
जुटलेनि बड़-बड़ वीर भूप रगरी[1]।
'द्रौपदी हमार होई' कहि कहि उठलें पै,
धनुहीं के झटका से टूटि गइलीं पसरी।
कल, छल, बल सब कइ कइ हारि गइलें,
लजिया के मारे जाइ बैठि गइलें कगरी[2]।
डाही[3] के जलन वाली, खलके खलन वाली,
द्रौपदी जुआरिन के दाँउ पर बा धरी।

१. झगड़ालू। २. अलग। ३. दाह करने वाला।

किरीट हाराङ्गद चक्रवालै-
र्विभूषिताङ्गः पृथुवाहवस्ते
अनुक्रमं विक्रम सत्वयुक्ता
बलेन वीर्येण च नर्दमानाः
हा हा कृतं तद् धनुषा दृढ़ेन
विस्रस्त हारांगद चक्रवालम्
कृष्णा निमित्तं विनिवृत्त कामम्
राज्ञां तदा मण्डलमार्तमासीत्।

उस सुदृढ़ धनुष के झटके से जिनके हार, बाजूबंद और कड़े आदि आभूषण दूर जा गिरे थे, वे नरेश उस समय द्रौपदी को पाने की आशा छोड़कर अत्यन्त व्यथित हो हाहाकार कर उठे।→

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेकरी सरिरिया[1] से कमल क गंध कढ़ि,
कोस-कोस भरि जाइ चारू ओर पसरी।[2]
अपने समान बस अपुनइँ[3] बाटै जौन,
धरती प जेकरे समान नाहीं दुसरी।
जेकर निहारि रूप भूप आह भरि देलें,
जरि-जरि रहि जालीं बड़ि-बड़ि सुघरी
सुकटि प्रदेस वाली, सुधर सुवेस वाली,
द्रौपदी जुआरिन के दाउँ पर बा धरी।

---

१. शरीर २. द्रौपदी के अंगों से नील कमल जैसी सुगन्ध प्रकट होकर चतुर्दिक कोस भर तक फैल रही थी।

नीलोत्पल समो गंधो
यस्याः क्रोशात प्रधावति
(आदि पर्व)

३. स्वयं ही।

महाराज द्रुपद की मखशाला में जहाँ द्रौपदी का स्वयंवर रचा गया था, राजा गण क्रमशः अपना-अपना पराक्रम प्रकट करने लगे। कर्ण, दुर्योधन, शाल्य, शाल्व, अश्वत्थामा, क्राथ, सुनीथ, वक्र, कलिंगराज, वंगनरेश, पाण्ड्य नरेश, पौण्ड्र देश के अधिपति, विदेह राज, यवन देश के अधिपति तथा अन्यान्य राष्ट्रों के स्वामी, बहुतेरे राजा, राजपुत्र तथा राज पौत्र जिनके नेत्र प्रफुल्ल कमल पत्र के समान शोभा पा रहे थे, जिनके विभिन्न अंगों में किरीट, हार, अंगद (बाजू बंद) तथा कड़े आदि शोभा पा रहे थे, जिनकी भुजाएं बड़ी-बड़ी थीं, वे सबके सब पराक्रमी धैर्य से युक्त हो बल और शक्ति पर गरजते हुए क्रमशः उस धनुष पर अपना-अपना बल दिखाने लगे। →

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छुईमुई[१] रानी सुकुआरि धान-पान अस,
चान के निसान अस देहियाँ क कजरी[२]।
सासु के परान अस, ससुर के सान अस,
उवलि[३] बिहान अस हँसि देली बखरी[४]।
द्रुपद के दान अस, पूरे ठकुरान[५] बदे
लोहुआ-लुहान अस रकते क बदरी।
तन से मियान वाली, मन से कृपान वाली
द्रौपदी जुआरिन के दाउँ पर बा धरी।

१. लाजवंती २. साँवली ३. प्रकट होना ४. आँगन दार, कोठा दार बड़ा कच्चा मकान ५. क्षत्रियों की बस्ती।

तत कार्मुकं संहन नोपपन्नं
सज्यं न सेकुर्मनसापि कर्तुम्।
ते विक्रमन्तः स्फुरता दृढ़ेन
विक्षिप्यमाना धनुषा नरेन्द्राः
विचेष्ट माना धरती तलस्या
यथा वलं शैक्ष्य गुण कृपाश्च।
गतौ जसः स्रस्त किरीट हारा
विनिः श्वसन्तः शमयाम्ब भूवुः (आदि पर्व)

परन्तु वे उस सुदृढ़ धनुष पर हाथ से कौन कहे, मन से भी प्रत्यञ्चा न चढ़ा सके। अपने बल, शिक्षा और गुण के अनुसार उस पर जोर लगाते समय वे सभी नरेन्द्र उस सुदृढ़ एवं प्रकाशमान धनुष के झटके से दूर फेंक दिये जाते और लड़खड़ा कर धरती पर गिर जाते थे। फिर तो उनका उत्साह समाप्त हो जाता, किरीट और हार खिसक कर गिर जाते और लम्बी साँसें खींचते हुए शांत होकर बैठ जाते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहि रहि करकि[1] उठेली जौन कर्ण-
दुरजोधन की आँखिन में बनि-बनि कँकरी।
जबसे भयल अपमान अभिमानिन क[2]

एक छन बदे नाहीं पुतरी से उतरी।
किसुन[3] के आगे जब किसुना[4] बुलुकि[5] देलीं
लागेली छलकि गैलि दुधवा क गगरी।
मान–अपमान वाली, कान्ह प गुमान वाली,
द्रौपदी जुआरिन के दाउँ पर बा धरी।

---

१. आँख में पड़ी किरकिरी से उत्पन्न होने वाला नेत्र कष्ट।

२. द्रौपदी ने कर्ण और दुर्योधन दोनों का अपमान किया था। स्वयंबर के समय जब कर्ण लक्ष्यवेध के लिए उद्यत हुआ तब द्रौपदी ने उसे सूतपुत्र घोषित कर लक्ष्य बेध के अधिकार से रहित घोषित किया।

दृष्ट्वा तु तं द्रौपदी वाक्यमुच्चै
जगाद नाहं वरयमि सूतम्।

इन्द्रप्रस्थ में मय दानव द्वारा निर्मित सभागार में जब दुर्योधन घूमते समय कई बार भ्रमित हो गया तो अन्य लोगों के साथ द्रौपदी ने भी उसका उपहास किया था। दुर्योधन ने स्वयं कहा :—

तत्र मां प्राहसत्कृष्णः पार्थेन सह सस्वनम्।
द्रौपदी च सहस्त्रीभिर्व्यथयन्ती मनो मम॥

३. कृष्ण ४. कृष्णा ५. रोने का एक अत्यधिक कारुणिक भाव।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कौन काज भैल कौन काही बदे नाही भैल,
खतम न होले हाली[1] जेकर कचहरी।
सासु जब जेंइ लेलीं पति-पूत पाइ लेलें[2],
दासी-दास खाइ लेलें तब खाली टिकरी[3]।
दुखिया क दुख हरि धीरज बंधावली त-
अस मीठ बोललीं कि फूटि जाले मिसिरी
आस-बिसवास वाली, व्रत उपवास वाली,
द्रौपदी जुआरिन के दाँउ पर बा धरी।

जेकरे स्वयंबर में पाँच बान धइ गइलें,
पाँच महकनियन बीच जौन लहुरी।
बंधु पांचजन्य धारी, पांचाल कँ कुँआरी,
पांच सुसुरन क पतोहु जौन दुलरी।
पाँच-पाँच पति वाली, पाँच-पाँच पूत वाली,
पाँच-पाँच कामिन से जिनगी में उबरी।
बेइमान पंचन से घिरलि प्रपंच वाली,
द्रौपदी जुआरिन के दाँउ पर बा धरी।

---

१. शीघ्र २. भोजन कर लेते हैं। ३. द्रौपदी के जीवन में संख्या 'पाँच' के अनेक योग थे। यथा-उसके स्वयंबर में लक्ष्यबेध के लिए पाँच बाण रखे गये थे।

इदंधनुर्लक्ष्यमिमे च वाणाः शृण्वन्तु मे भूपतयः समेताः।
छिद्रेण यन्त्रस्य समर्पयध्वं शरैः शितैर्व्योमचरैर्दशार्धैः॥
(आदि पर्व)

वह पाँच महाकन्याओं में एक थी। पांचाल (पंजाब) कुमारी थीं, उसके पाँच ससुर (सूर्य, धर्मराज, इंद्र, पवन, और पांडु) थे। पाँच पतियों और पाँच पुत्रों वाली थी। जीवन में पाँच कामियों (कर्ण, दुर्योधन, दुशासन, जयद्रथ और कीचक) ने उसे कलंकित करने की कुचेष्टा की थी, उसका बेइमान पंचों से पाला पड़ा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रानी पटरानी बाटै, घर क जेठानी बाटै,
ढरहरि[1] देह जस सँचवा में बा ढरी।
द्रौपदी कहेला केहू, केहू पांचाली,
केहू यज्ञसेनी, किसुना त केहू होम कुँअरी।
'याग' क प्रयास भइलें, यज्ञ क सुपास भइलें,
लपट से भाई आपु बेदिया से निसरी[2]।
नीक चाल-ढाल वाली, तबउ बवाल वाली,
द्रौपदी जुआरिन के दाँउ पर बा धरी।

पानी पर रानी बाटै, रानी पर पानी बाटै,
नाभि बा भँवर करिहाउँ तनी पतरी।
और नारि दासी अस आपु रनिवाँसी अस,
पावन बा कासी अस केस गंग लहरी।
हँसले प लाल झरै, रोवले प मोती गिरै,
ओठन गुलाब चुवइ, बोली फूल कै झरी।
मंद मुसुकान वाली, भरि मुँह पान वाली,
द्रौपदी जुआरिन के दाँउ पर बा धारी।

---

१. चढ़ाव-उतार वाली २. द्रौपदी का प्राकट्य यज्ञ की वेदी से हुआ था। द्रोण द्वारा अपमानित पांचाल नरेश द्रुपद ने प्रतिशोध हेतु याग ऋषि से ऐसा पुत्र प्राप्त करने के लिए यज्ञ कराया जो द्रोणाचार्य का बध कर सके। उसी यज्ञ की वेदी से (धृष्टद्युम्न के पश्चात) द्रौपदी की उत्पत्ति हुई थी—

कुमारी चापि पांचाली वेदी मध्यात समुत्थिता।
(आदि पर्व)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पारी बान्हि-बान्हि रति दान बदे पाँचो पति,
बरत उठाइ लेलें नारद के न्याउ पर[1]।
बढ़ल दुलार बाटै अधिक सुभदरा से,
कृष्ण भइलें धर्म बंधु रिझलें सुभाउ पर।
सौत्रामणि माई भइलीं, द्रुपद जनक भइलैं,
भैल विसवास बरदान के प्रभाउ पर[2]।
टेढ़ मेढ़ केस वाली, आसिस महेस वाली,
द्रौपदी पड़लि बा जुआरिन के दाँउ पर।

---

१. माता कुन्ती के आदेश से तथा व्यास जी के निर्णय से पांडवों के साथ द्रौपदी का विवाह हो जाने के पश्चात एक दिन नारद जी पधारे। द्रौपदी अर्जुन द्वारा जीती जाने पर भी, पाँचों भाइयों की हो चुकी है, यह वृत्तान्त उन्हें पहले ही ज्ञात हो चुका था। अतः पांडवों का हित चाहने वाले नारद ने उनसे कहा :—

पांचाली वभतामेका धर्म पत्नी यशश्विनी।
यथा वो नात्रभेदः स्यात तथा नीतिर्विधीयताम ॥
(आदि०)

इस सन्दर्भ में उन्होंने ही नियम बना दिया था कि द्रौपदी एक वर्ष तक एक भाई के पास निवास करेगी। इस नियम का उल्लंघन करने वाला प्रायश्चित करेगा।

२. द्रौपदी की माता सौत्रामणि तथा पिता द्रुपद ने नरद को प्रसन्न करके यह बरदान प्राप्त किया था कि धृष्टद्युम्न तथा द्रौपदी हमें सदैव अपनी सगी माता तथा सगा पिता समझते रहें, उनके मन में किसी प्रकार का भ्रम न आने पावे।

[द्रौपदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्म क दाँउ न आवत बा,
सकुनी हर चाल प मात करेला।
राष्ट्रपती धृतराष्ट्र कहावला,
भाड़ में भाई क झोंकै गदेला[1]।
बइठल-बइठल ई अपने—
कुल बोरन[2] कै जब जीत सुनेला।
देखलें आँखि बचाइ सबै,
अन्हरा अपनी मोछियइ में हँसेला[3]।

जौने कुरुवंस क धुजा अकास फहरलि,
एकरे कुकरम से भूईं लंथराइ गैल।
सांतनु कुमार सुरसरि सुत भीषम के;
गलवा प आजु अलकतरा पोताइ गैल।।
पागल बनाइ देला धन मद मनई के,
लोलुप भयल पाप मन में समाइ गैल।
स्वारथ में चूर धृतराष्ट्र अस मैल भाई,
पूत मोह जीति गैल भायप भुलाइ गैल।।

---

१. लड़का २. कुल की मर्यादा नष्ट करने वाला।

जुए का खेल चलते समय धृतराष्ट्र मन ही मन प्रसन्न होकर विदुर से बारबार पूछ रहे थे, "कौन जीत रहा है! कौन जीत रहा है?" वे अपनी प्रसन्नता की आकृति छिपा नहीं सके :—

धृतराष्ट्रस्तु तं हृष्टः पर्य पृच्छत पुनः पुनः।
किं जितं किं जितमितिह्याकारं नाभ्यरक्षत।।

(आदि पर्व)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दाढ़ी के ऊपर मोछि खड़ी-खड़ी,
मोछि के नीचे में दाढ़ी परी बा।
सान से अँइठत बा अन्हरी—
अँखिया के लगे तकि नोक चढ़ी बा।
दाढ़ी में मोछि बा, मोछि में दाढ़ी बा,
ऊजरि-ऊजुरि खूब फबी बा।
लेकिन दूनउँ के निचवाँ,
करिया[1]-करिया मुसुकान दबी बा।

बोलल बा छलिया ममवाँ तब,
हाथ घुमाइ के चूमि के पासा।
हे भगिना[2] तजि दऽ अब पाँचउ-
जने अपनी द्रौपदी कइ आसा।
कर्ण, दुसासन अउ दुरजोधन,
तीनिउँ जने अब देखऽ तमासा।
ऊ चिरई[3] फँसि के रहिहइँ-
जेकरे बदे लागल बाटइ लासा।

---

१. काली २. मांजा ३. द्रौपदी के प्रति अशोभन संबोधन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करन हँसेला दुरजोधन ठठात बाटै,
सकुनी के बोलिया में भरल अहम बा।
"बाहरे धरमराज, खूब बाटऽ महराज,
नाहीं तोहै लाज नाहीं तनिकउ[1] सरम बा।
जाइ सोरे भगिना के चाकरी से पेट भरऽ,
जूआ का तू खेलबऽ बचल कौन दम बा।
इहउ दाउँ जीति गइली, इहउ दाँउ हारि गइलऽ,
पइसा हजम अब खेलिया खतम बा।

जेकरे भरम होइ पासा आइ देखि जाइ,
सब जन जानि लेहु सुनि लेहु बतिया।
और सब बाटै खाली[2] कृष्ण अउ द्रुपद नहीं,
ओनहूँ के लिखि के पठाइ देब पतिया।
जवनी[3] प नेह ढेर करलें सुभदरा से,
हारि गइलें ओनकी बहिनि क सवतिया।
धृष्टद्युम्न क बहिनि हारि गइलें जूआ पर,
हारि गइलें जूआ पर द्रुपद क बिटिया।

१. तनिक भी २. केवल ३. जिस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोगन के जेतना अपसोच—
न बाटै युधिष्ठिर के हरले कऽ।
आगम सोचि के ओसे बड़ा—
दुख बा दुरजोधन के जितले कऽ।
आगे दुका[1] परिणाम लिखायल-
बा छलिया ममवाँ के छले कऽ।
जानत ना अन्हरा क कपूत
कि नागिनि खोदत बाटै गले कऽ।

नाउँ युधिष्ठिर धर्म क मूरति,
ते गइलें जब मेहरि[2] हारी।
ई सुनि के त सधारन मानव,
भी हरिहैं बहिनी–महतारी।
खेल बड़ा भइलें जग में,
पर अइसन देखल नाहीं जुआरी
ना तनिकउ सोचलें मन में,
हरलें फड़[3] ऊपर साझे क नारी।

---

१. न जाने क्या २. पत्नी ३. जुआरी जिस स्थान पर कौड़ी फेकते हैं उसे फड़ कहते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्हरा क जेठरा कपुतवा धधायल [१]बा,
कवनो[२] तरह के कुकरम से ना डरे।
पाप क घड़ा जवन खाली बाटै थोर-मोर,
आगम जनात बाटै तवने[३] के भी भरे।
पुरखा जे बइठल सरगे में तपबल,
अपबल देइ ओनहूँ के[४] नरके धरे।
जेहि देस क धरमराज अस नीच उहाँ,
अधरम दुरजोधना न जाने का करे।

दीया लेइ खोजले प अइसने जुअरिया क,
जग में न कतउँ परतोख[५] मिलि पाये रे।
पांडु महराज के लोहारक[६] ई जनमल,
धरम के मुँह पर करिखा पोताये रे।
सब किछु हारि गैल एक चीज सेस बाटै,
जानि परै ऊहो अब दाउँ प लगाये रे।
आजु मेहरारू[७] जइसे हारल बा जूआ पर
तइसैं कालि सग महतारी हारि जाये रे।

---

१. सीमा से बाहर २. किसी ३. उस ४. उन्हें ५. उदाहरण
६. नाशक ७. स्त्री।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भैल स्वयम्बर द्रौपदी कै,
तब ना धनुहीं के लगे नियरायल।
बीर सबै तकतै रहलें—
मछरी कइलैं उठि पारथ घायल।
राज कुमारी बनी भिखिया,
महतारी के राइ से भीखि बँटायल[1]।
सेति में मेहरि बा पउले,
अब हारै बदे लगवाँ चलि आयल।

---

१. अज्ञात वास के समय पांडवों की जीविका का साधन भिक्षाटन था। जिस दिन स्वयम्बर में अर्जुन ने द्रौपदी को लक्ष्यबेध करके जीता उसी दिन सायंकाल जब पांडवोंने माता कुन्ती की कुटी में प्रवेश करने के पहले बाहर से ही यह सूचना दी कि "माँ हम लोग भिक्षा लाये हैं", तो कुन्तीने द्रौपदी को बिना देखे ही अनजाने में कह दिया "भिक्षा लाये हो तो तुम सभी मिलकर उसे पाओ" :—

कुटीगता सा त्वनवेक्ष्य पुत्रौ
प्रोवाच भुङ्क्तेति समेत्य सर्वे
(आदि पर्व)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करनी जुआरिन क जग बीच जाहिर बा,
दाउँ प लगाइ भाइ, सबही के हारि जात।
बेदन के मंत्रन, पुरोहित के लात मारि,
लगे हाथ एही फड़ पर पिंड पारि जात।
"गोहुआँ के रासि पर गोबर बढ़ावन" बा
एन्है बिनु सून बाटै किसुना[1] क अहिवात।
ई त कहऽ अगवइँ[2] पांडु जरि-मरि गइलें,
जीयत जौ होतें आजु ओन्हूँ के हारि जात।

ताल के ऊपर ताल लगावत,
गूँजन से सभदा भरले बा।
कौन जरूरत बा बल कऽ,
छल से छलि बाजी सबै मरले बा।
भारी खुशी से भरा मन–
मातुल के अँकवारिन में भरले बा।
जूआ न बा जितले दुरजोधन,
लागत विस्व विजय कइले बा।

१. कृष्णा २. पहले ही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विजय के मद भरि पागल भयल बाटै,
बातुल नियर बकै नाहीं किछु चेत बा।
जूआ पर बाजी मारि, जीति के पराई नारि,
सभवा में गरजत जइसे परेत बा।
काहे रन जूझ करै, बीरन से काहे लड़ै,
पसवइ[1] एनहन बदे कुरुखेत बा।
एक हाथ कर्ण पर, एक बा दुसासन प,
फेरि-फेरि मूछन प ताउ धइ देत बा।

बोलल बा दुरजोधन, कूँची-
उठाइ के झाड़ू बोहारू सँवाजइँ[2]।
रानी रहीं अब पानी भरइँ,
चलि के हमरे घर बासन माँजइँ।
जो प्रतिकामी[3] तहीं कहि दे-
द्रौपदी रनिवाँस में ना अब गाजइँ।
पाँचउ भतारन के तजि के-
चलि के छठइँ सेजिया प बिराजइँ।

---

१. पासा ही २. सँमाले ३. प्रातिकामी नामका एक सेवक जिसे द्रौपदी को सभा में बुलाने के लिए दुर्योधन ने आदेश दिया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहे तहीं चचवा[1] चलि जो,
तनी धीरे से जइहे करेज न फाटइ।
नागिनि तैं पोसले करिया,
कहि दे कि सँपेरन के अब काटइ।
जइसे स्वयम्बर में बतियउलेसि,
साहस होइ त ओइसइ डाटइ।
जेकर कइले निरादर बा,
उहइ सूत क पूत बोलवत बाटइ॥

सूत के पूत के आगे अभी
भल आपन चाहै त नाचत आवइ।
बेस्सन[2] कै कस होले चरित्तर
आइ भतारन के समुझावइ।
बारबधू बस सम्पत्ति चाहेली,
सोचि सबइ बिपदा बिसरावइ।
भागि से ई दिन आयल बा
अब अंग नरेस के अंग लगावइ॥

---

१. विदुर के प्रति निरादर सूचक संबोधन।

एहिक्षत्तद्रौपदीमानयस्व प्रियां भार्यां सम्मतां पाण्डवानाम्।
सम्मार्जतां वेश्म परैतु शीघ्रं तत्रास्तु दासीभिर पुण्यशीला॥

२. वेश्याओं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In.Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सालति बा बतिया हियरा में,
इहइ बेसवा[१] हमें देलेसि गारी।
'आन्हर के अन्हरइ जनमें'
कहिके मुसुकाइ बजउलेसि तारी।
इ बदला अजुअइ चुकिहइँ,
हमरउ अब आइल बाटइ पारी।
बीच सभा में उघारब जेकर–
होइ करेज ते लागइ गोहारी।

कहि दे कि याद करइ इन्द्रप्रस्थ वाली बात,
कहलेसि किछु दिन रहि ओर पलि लऽ[२]।
नाहीं धृतराष्ट्र क महल ई युधिष्ठिर क,
फेरि नाहीं अइबऽ अउर तनी चलि लऽ।।
थल जानि जब हम गिरि गइली बउली[३] में,
तारी पीटि कहलेसि और आगे हलि लऽ[४]।
झूर[५] कपड़ा बढ़ाइ मुसुकाइ बोलल कि,
'विषधर नाग हलऽ[६] केंचुलि बदलि लऽ'।।

---

१. वेश्या २. तन्दुरुस्त हो लो ३. बावड़ी ४. पानी में जाने का संकेत ५. सूखा ६. लो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमके महल में सुनाइ अस कहलेसि,
"दुर्ग–दुरगिल्ली[1] में फरक अब जनिहैं।
राजसूय यज्ञ भैल, सिसुपाल बधि गैल,
अपने से धर्म[2] के महान अब मनिहैं।
सात पुस्त मिलि के कमाइँ पेट काटि-काटि,
तबो नाहीं एतना महान दुर्ग तनिहैं।
हस्तिनापुरी क कुलि संपति बिकइले प;
मोरे इन्द्रप्रस्थवा क एक ईंट बनिहैं।"

भागि में बदा बा जब चेरिया क जीवन त,
कहि दे कि पानी अब फेरि लेइँ आसा पर।
गुड़ देहले से जब अरि मरि-जरि जाइ,
सेना काहे रखी हम बरछा-गड़ासा पर।
इन्द्रप्रस्थ में बिहार दास मोर करिहइँ
दुर्ग संग ओनहूँ के जीति गइली पासा पर।
गरब-गुमान बिसराइ देइँ पहिले क,
फूटि जइहैं नाँचइँ मति अधिक बतासा पर।

---

१. किले का उपहास बोधक शब्द २ युधिष्ठिर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस नीच बोलिया सुनत दुरजोधन क;
बिदुर के देहियाँ में आगि लागि गइलीं।
भउहँ कमान भइलीं, चाढ़े असमान गइलीं,
कर्ण से दुसासन से आँखि टकरइलीं ॥
तिनहूँ ठठाइ देलें, मुहवाँ बिराइ देलें.
बिदुर क बतिया ओही में उधिरइलीं।
तीन-तीन अट्टहास के नकार खाने बीच,
तूती क अवाज बपुरी सहीद भइली ॥

दाढ़ी पर हाथ फेरि ऊरध भुजा उठाइ,
ऋषि अस बोललें बिदुर स्वाभिमान से।
बड़-बड़ पंडित बताइ गइलें ग्रंथन में,
बीर न भयल केहु जूआ के खेलान से ॥
नाहीं मद्यपान से सराहल गयल केहु,
सोहलें नरेस जग्गि[1] धरम से, दान से।
कि त धर्मसास्त्र क प्रमाण धइ देलें,
कि त छतिरी क पूत बतियालें धनु-बान से।

---

१. यज्ञ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भायप सराहेला सबइ राम-भरत कऽ,
तोरे अस बंधु भाग भाइन क मारेला।
अपने के आगि बीच झोंकि देला भीम अस,[1]
भाइन क बिपति उठाइ सिर धारेला।
कायर आ कामुक हँसेला पर नारि देखि,
लाजवंत पड़लि नजर भी हटावेला।
सील भंग दुसरे क करइ में बड़ाई कौन,
बीर ऊ जे जात लाज आन क बचावेला।।

---

१. लाक्षागृह में दुर्योधन के आदेश से पुरोचन द्वारा आग लगाने पर भीम ने ही अपने चारो भाइयों तथा माता कुन्ती की रक्षा की थी :—

भीमसेनस्तु राजेन्द्र भीम बेग पराक्रमः।
जगामभ्रातृनादाय सर्वान मातरमेव च।।
स्कन्धमारोप्य जननीं यमावङ्केन वीर्यवान।
पार्थौ गृहीत्वा पाणिभ्यां भ्रातरौ सुमहाबलः।।
(महाभारत—आदि पर्व)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाग नाथ के संघाती मिलि गइलें साँपनाथ,
सकुनी बा मातुल त बिरना दुसासना।
एक तउ तितलौकी अपुनइँ[1] रहले तैं,
चढ़ि गइले नीबि[2] मीत मिलि गैल करना॥
नीच से भी नीच कर्म संभव बा तोरे बदे,
बाकी जब जूझि[3] होई, मिलिहैं न सरना।
निरमल कुरुबंस गयल रसातल में,
तोरे अस नीच नहीं बाटे दुरजोधना॥

कारन तैं बनबे, लिखलें विधि-
वंस क नास त केउ न उलाटें।
तोरे कुकर्म से बाढ़त जात बा
बैर क खाईं पटे नहिं पाटे।
याद हमारि परी बतिया,
नइया परिहैं जब अवघट घाटे।
नाचत काल कपारे प तोरे,
भले घर बायन बाँटत बाटे।

१. स्वयं २. नीम पर ३. युद्ध।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खाट-मीठ फल होले, छाहँ होले राहिन के,
बिख रुख जमले से भलि होले परती
गोचर भी नीक होले, जनम सफल होले,
धाइ-धाइ जाइ-जाइ गाइ जब चरती ॥
आँचर खुलत[1] नाहीं भले निरबंस होत,
भले नाहीं कोख भउजइया[2] क तरती।
तोरे अस पूत से निपूती भले रहतीं,
तैं जनमें त लाज बस गड़ि गइलीं धरती।

पपवा क घट तोर भरतइ जात बाटै,
भाइन क हक मारि मोहें तकि भरले।
सिंहिनी[3] सियारन[4] के बदे नाहीं जनमलि,
सपनेउँ न पइबे तैं एन्हैं जुआ जितले ॥
आजु बड़ भारी पुरुषारथी बनल बाटे,
काहे इहै पौरुष देखउले नाहीं पहिले।
काहे नाहीं जितले स्वयम्बर में लक्ष बेधि,
बहियाँ फुलाइ के तहूँ त गैल रहले ॥

---

१. पहली संतान होने पर यह मुहावरा प्रयुक्त होता है। २. गांधारी
३. द्रौपदी ४. दुर्योधन आदि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तें अइलो कुरुबंस में,
मैं कहली तबै 'पोते मुहें पर काली* ।
बोली अजूबी कढ़ी रहलीं,
बन बीच सियारिनि जइसे हुँआली ।
एक तियागे सबै बचिहैं,
कुल कै अंगरा हौ बुताइ द हाली[1] ।'
मानल होतीं जउ बात हमार
बनी रहतै कुरुबंस क लाली[2]

---

* दुर्योधन के जन्म लेने पर परम बुद्धिमान विदुर जी ने कहा था—यह बालक अपने कुल का नाश करने वाला होगा। अतः इसे त्याग देना चाहिए। इसने जन्म लेते ही गीदड़ की भाँति हुआँ-हुआँ शब्द किया था :—

जाते दुर्योधने क्षत्ता महामातिर भावत ।
नीयतां परलोकाय साध्वयं कुल पोसनः ।।
व्यनदज्जात मात्रो हि गोमायुरिव भारत ।
अन्तो नूनं कुलस्यास्य कुरवस्तन्निबोधत ।।

१. शीघ्र २. मर्यादा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तहूँ अउर तोर मीत कर्ण अपमान सहि,
याद त परत होइ जाइ बैठि गइले
आजु तकि बोलु भला कौन रन जितले तें,
बोलु तनी कहिया से बनहाँ तें भइले।
पारथ देखाइ पुरुषारथ स्वयंबर में,
सरगे की लछिमी क पति बनि गइलें।
लछिमी नारायन के संग चलि गइलीं तें,*
नेबुआ आ नून चटतइ चलि अइले॥

* द्रौपदी स्वर्ग की लक्ष्मी थी और अर्जुन को नारायण का अंशावतार कहा गया है। व्यास जी ने द्रुपद से एक प्रसंग में कहा कि राजन् ! ये पाण्डव पहले इन्द्र रह चुके हैं और यह दिव्य रूपा द्रौपदी स्वर्ग की लक्ष्मी है :—

एवमेते पाण्डवाः सम्बभूवु-
र्ये ते राजन् पूर्वमिन्द्रावभूवु
लक्ष्मीश्चैषां पूर्वमेवोपदिष्टा
भार्यायैषः द्रौपदी दिव्य रूपा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोलल बा दुरजोधन कर्ण से,
ई बुढ़वा सठिआयल बाटै।
कौन अकाज बिना एकरे,
भुइँ भार बढ़ावन आयल बाटै।
कइसे जवानी दबउलोसि देखऽ,
बुढ़ाई में ई उधिरायल बाटै।
खात त बा धृतराष्ट्र क, पांडु-
कुमारन पै छोहनायल[1] बाटै॥

लाज न लागेली क्षत्रप[2] मोर-
विरोध करेला मोरे हतिना[3] में।
टूटल दाँत, टेढ़ाइल कम्मर
बा मन लागल बालपना में॥
पातन के रखवारी में लागल,
आगि लगावत बाटै तना में।
सूतत बा धृतराष्ट्र के आंगन,
पांडु के देखत बा सपना में।

१. कृपालु २. विदुर ३. हस्तिना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भीतर जाइ के बोलल बा—
प्रतिकामी, "सुनऽ बतिया महरानी।
पांडु क जेठि पतोहु तुहीं,
तुहईं सब पांडव कै पटरानी।
जौने बदे भेजलें दुरजोधन,
ऊ कहि जात न बाटै कहानी।
कौनो उपाइ रचऽ मन में,
निहचै तोह के करिहैं बिनु पानी

माफ किहू सुनि के बतिया,
मन से बहुतै हम घायल बाटी।
नास लिखायल भागि में बा,
कुरुबंस क के बिपदा अब काटी।
आगम लागत बा हमके,
किलवा में लगे अब काल क टाटी।
रोजी में आगि लगइ हमरे,
अस हुक्म सुनावइ आयल बाटी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्म तोहै हरलें फड़ ऊपर,
बइठल काल बितावत बाटें।
ई कुलियइँ[1] सकुनी कइलें,
अब पापी अदेस[2] चलावत बाटें।
ना केहु रोकत बा तनिकउ,[3]
तोहके सब गारी सुनावत बाटें।
सिंहिनि आवऽ सभा में चलऽ
सियरा सब तोके बोलावत बाटें।"

"सम्पति ज हरतें त रन-बन चलि जइतीं,
साइत[4] विधाता आइ मति मारि गइलें।
नल क कहानी काहे भूलि गइलें धर्मराज
कइसे दमयंती क करम[5] जरि गइलें।
सब किछु हरलें त नाहीं दुख बाटै, पर-
जवन न करै के तवन करि गइलें।"
सूत प्रातिकामी क बचन सुनि द्रौपदी के
कानन में जरतइ तेल परि गइलें।

१. सभी २. आदेश ३. तनिक भी ४. शायद ५. भाग्य।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"गुरुजन, पुरजन, ऋषि-मुनि जानलें मैं,
पुरुष पराये के अगाड़ी नाहीं गइलू।
बाप और भाई क छुटलु छाहँ जबसे बा
ससुरे पतिन संग जीवन बितइलू।
ठकचल मख बीच[1] बीर अरजुन बदे,
राजन के आगे बरमाल लेइके अइलू।
आजु दुरजोधन बोलावेला सभा के बीच,
वृद्धन से पूछि लऽ कसूर कौन कइलू ?

पहिले त भीषम बबा से जाइ पूछिह[2] जे,
काही के बोलवलें हँ कवन मरम बा ?
फेरि गुरुवर[3] से बिनय मोर कहि दिहऽ
कहि दिहऽ द्रोपदी के लागत सरम बा।
तब धृतराष्ट्र और बिदुर के आगे जाइ
पूछिहऽ कपूतन क कवन करम बा ?
और केहु श्रेष्ठ होइ, वृद्ध होइ पूछि लिहऽ
एहि समै द्रौपदी क कवन धरम बा ?"

---

१. स्वयम्बर की ठसाठस भीड में २. पूछना ३. द्रोणाचार्य।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइ सवाल सुनउलेसि भीषम,
द्रोण से, केउ किछु बोलल नाहीं।
सांत समुद्र समान सभा केउ,
अमृत आ विष घोरल नहीं।
बान्हलि जीभि बन्हीं रहि गइलिनि,
साहस कइ केहु छोरल नाहीं।
न्याउ क प्रश्न उठउलेसि पै,
जिभिया सभवा क भी डोलल नाहीं।

बोलल बा दुरजोधन जोर से,
"अइसइ चले एन्हने क पँवारा।
दास हौ काँपत बा भय से त,
बेकार बा भेजब एके दुबारा।
भाई दुसासन तैं चलि जो,
रनिवाँस में राज बताइ दे सारा।
आइ के पूछै उहै बेसवा यहँ,
कइसे क हारल धर्म बेचारा?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लौटल बा प्रातिकामी गयल दुसासन बा,
सिंहिनी दुखित गजराज घेरि लेले बा।
पाँच-पाँच बाघन से दूरि माद बीच बाटै,
केहु नाहीं पास बाटै पउले अकेले बा।
धरम दबायल, अधरम उधायल बा,
किछु न सुनेला कुलि बतिया घघेले[1] बा।
अवभृथ[2] स्नान राजसूय में भयल उहै,
टेढ़-मेढ़ बार[3] धइ सभा में झोंकि देले बा।

बाढ़ल पाप सबै चुप बा,
रचना विधि कै अजगूत देखइलीं।
देलेसि भारी दरेर दुसासन,
आहत होम सुता गिरि गइलीं।
चन्द्रमुखी श्रमबुन्दन भींजलि,
माँग भरी केसिया लथरइलीं।
चान तरेंगन अउ बिजुरी,
लिहले, दिहले बदरी भहरइलीं।

---

१. अंट-संट तर्कों से सत्य को झुठलाना २. यज्ञ से पूर्व पटरानी के केशों का तीर्थों के अभिमन्त्रित जल से स्नान कराना ३. घुघराले बाल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोचलीं होमसुता अपने मन
ना हमरे अस नारि अभागी।
जे के लखउँ तेइ मूड़ी ओनावत,
आगी में अउर लगावत आगी।
द्वापर के मुँह कारिख अउ-
कुरुबंस के माथे लगाइ के दागी।
बीदुर के अगवाँ तब द्रौपदी,
बीदुर काढ़ि के रोवन लागीं।[1]

हाथन क टेक देइ कहँरत ठाढ़ि भइलीं,
बरवा झटकलीं अँजोर छाइ गइलें।
आँखिन से टपर-टपर मोती झरि गइलें,
दुरगति सोचि मन माख आइ गइलें।
धीरज धरेलीं पर तन बीच, मन बीच,
करम दुसासन क आगि लाइ गइलें।
जरत उरोजन प माथे से रकत चूइं,
सूखल, चकोर जनु आगि खाइ गइलें।

१. अत्यधिक अपमानित होने पर रोने की मुद्रा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइसउँ सम्हारि के भइलिनि ठाढ़ि,
गुहारइँ सबै केहु बोलत नाहीं।
"भीषम, द्रोण, चचा बिदुरउ–
चुप बइठल रे मुँह खोलत नाहीं।
कइसन ई दरबार कि न्याउ–
अन्याउ तुला पर तोलत नाहीं।
ए हो बिकोदर ! काही बदे,
तोहरउ जिभिया तनिउँ डोलत नाहीं।

तोहरे भरोसे निरदुन्द परिवार रहै,
हाइ राम आजु तुहूँ भइलऽ देखनहरू[1]।
आँखिन के आगे लछमिनियाँ लुटत तोर,
जागइ क पहर आइ सोइ गइलऽ पहरू।
भारी अचरज हमैं देखि-देखि होले आजु;
बघवा के आगे उछरत बाटें पँड़रू[2]।
गरजि-गरजि के अकास भरि देलऽ पर,
बरसै क पारी तब मौन भइलऽ बदरू।

---

१. दर्शक २. भैंस का बच्चा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गरब, गुमान भरि नद उफनायल बा,
बनि के पहार आजु धार मोरि देतऽ तूँ।
अरज हमार सुनि गरजऽ बदरऊ[1] अउ,
बैरिन क गर्भ गरभइ में बोरि देतऽ तूँ।
मोर हनुमान करि मुठिका प्रहार फेरि,
रवना[2] के पूत क परान छोरि लेतऽ तूँ।
मोटि-मोटि बाहँन से मोटकी गदा घुमाइ,
कस न दुससना क बाँह तोरि देतऽ तूँ।

जउ धनुहाँ धरबऽ हथवाँ तब,
साहस बा केकरे बढ़ि रोके ?
तूँ न कभी रन में मुरलऽ प्रभु[3]
ई करनी कस सोहले तोके ?
जानत जउ रहलऽ पहिलइँ,
तोहरउ बहियाँ हमें भाड़ में झोंके।
पारथ बोलऽ स्वयंबर में तब,
काही बदे जितलऽ चढ़ि मोके।

---

१. भीम के प्रति संबोधन २. रावण ३. अर्जुन के प्रति संबोधन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दाउँ पर धरत-धरत कुलि थकि गइलऽ
अंत जाइ धइ देलऽ बियहलि नारी तूँ।
जगर-मगर जोति मुकुट से होत रही,
बाकी अब बनि गइलऽ आग अन्हियारी[1] तूँ।
हरतइ[2] चलि गइलऽ, हरतइ चलि गइलऽ,
तबउ न समझलऽ मरम किछु भारी तूँ।
एकउ बेरी दाउँ नाहीं आयल तोहार तब,
कइसन हौ जूआ और कइसन जुआरी तूँ ?

ना सोचलऽ तनिकउ तर-ऊपर
बुद्धि तोहार के बाउर कइलें ?
नारि रखाइल दाउँ के ऊपर
कर्म तोहइ अस कइसे सोहइलें ?
हारल होबऽ हमइ विसवास
न बा तोहरी मति के भरमइलें ?
धर्म क पूत तू धर्म क मूरति,
धर्म तोहार कहाँ चलि गइलें ?

---

१. जिसका भविश्य अंधकार मय हो २. हारते ही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कभी अपकार नाहीं सोचलें केहू के प्रति,
कइसे जानि पउतें तब पापिन के घात के।
आगे-पाछे लाउ-लस्कर रहलनि अब,
बइठल बेचारू बाटें हाथ लाइ माथ के।
देस अउ देसन्तर क जुटलें नरेस तबउ,
झंखें के परल बा गोहरिहा[1] के साथ के।
सुधवा सुभाउ नाहीं छल न कपट जानैं,
कौनो भरमाइ देलें मोरे भोलानाथ[2] के।

सूध सुभाउ हमार दुखी जनं,
के दुख कं फोरलिउँ न फफोला।[3]
काँट-कुसा डहरी से हटाइ,
सदा रोपलिउँ छतनार अमोला।
बूढ़ पुरान बतउलेनि रे
करनी जस बा भरनी तस होला।
सीतल पूनम मैं बोवलिउँ,
तब काही के जामल आगि क गोला ?

---

१. गुहार लगने वाले २. युधिष्ठर प्रति संबोधन ३. छाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रेष्ठ सबै रहलें जब देखत,
कइसे धराइल दाँउ प नारी।
काही बदे केहु बोलल ना यहँ,
का सब कै मति गइलिनि मारी।
बेटी–बहू सबके घर में,
केहु अइसन बा देखले दुखियारी ?
ना केहु बोलत बा सबके,
घर में होइहइँ बहिनी–महतारी।

आपन बहिनि होत चाहे बहुआरि होत,
असहीं उघारी[१] होत का तबउ सहतऽ ?
बेटी, महतारी होत, परबस नारी होत,
का तबउ सब जन अस मौन रहतऽ ?
लासिन प लास गिरि जात भूइँ पटि जात,
छाती हाथ देइ सोचऽ धीरज का धरतऽ ?
अपनी की बेरी जौन करतऽ सबइ जन,
हमरी की बेरी उहै कस नाहीं करत ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजु इहाँ सब लोगन से हम,
मागीले केवल न्याउ क छाहीं।
के देहलें अधिकार दुसासन,
खींचल बार मिरोरल बाहीं।
गारी के ऊपर गारी बकैं बदे,
छूट देखाले न बाटैं मनाहीं।
न्याउ करऽ मिलि देस के लोग,
मैं जूआ में हारलि बाटी कि नाहीं ?

सरगे से सांतनु पितामह निहारैं तोहै,
ए हो बाबा राखि बाप जी क परतीति लऽ।
बड़ि-बड़ि बिपति क उत्तर अकेल तुहीं,
मौन काहे मनमें विचारि तनी नीति लऽ।
डूबत रहल कुरुबंस जइसे राखि ले लऽ*
फेरि कुल पालक क पालि आजु रीति लऽ।
थोरी देर मानि गइली हमैं धर्म हारि गइलें,
ठाढ़ होउ आपन पतोहु रन जीति लऽ।

---

* भीष्म ने विदुर से एक प्रसंग में कहा था कि एक बार हमारे वंश पर संकटकाल उपस्थित हुआ था। उस समय मैंने, माता सत्यवती ने तथा कृष्ण द्वैपायन (व्यास) ने पुनः मिलकर इस वंश को स्थापित किया था :

मया च सत्यवत्या च कृष्णेन च महात्मना
समवस्थापितं भूयो युष्मासु कुल तन्तुषु। (आदि पर्व)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्मराज हरलें त मोर कौन गलती बा,
काही बदे पूर सभा बनि गैलि क्रूर बा ?
पक्ष आ विपक्ष दूनो ठाढ़ बाटै समुहें प,
हमहूँ न दूरि बाटी, उहौं[1] नाहीं दूर बा।
आँखिन के आगे तू अनीति कभी देखलऽ न,
राउर जबान आजु काहे मजबूर बा ?
सारी मोर तार-तार भले निछ्वाइ[2] दऽ पै,
एतनै बतावऽ मोर कवन कसूर बा ?

खींचि ले सारी उघारि दे देहँ,
बिठाइ दे जाँघि कहैं सब संगा।
सोहे न ई तोहके सब तोरी,
पतोहू क जौ देखिहैं तन नंगा।
कर्म तोहार जौ जाह्नवी जानिहैं,
कोखि में आयल मोरे लफंगा।
पूत के पाप गलानि उठे मन–
में अजुअइ जरि जइहइँ गंगा।

१. दुशासन के प्रति २. रेशा-रेशा अलग करवा दो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरत बैन निकारत बा,
बन रोवन[1] भइलें प्रभाउ न लागै।
ऊँचि अदालत बाटइ खचाखच,
न्याउ क भीखि न पावलीं मागे।
सोवत के त जगावत जाले पै-
जागत सोवइ त कइसे क जागे ?
द्रौपदी रोवलीं रे जइसे,
गइया अललालीं[2] कसाइन आगे।

आँखि पसारि के मौन निहारत,
बा सबहीं दुरभागि क खेला।
आपु सती सुत पाँच पती फेरि,
पाँच के पाँचउ बीर बघेला।
अइसन बीरन बा जेकरे,
बइरी न अँटै जब चक्र धरेला।
हारि-गोहारि न बा तेकरे,
रोवले बन में बन पात झरेला।

१. अरण्यरोदन २. असहाय का चिल्लाकर विलपना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोलल बाटै विकर्ण[1] तबइ,
विलपेली सभा में खड़ी भउजाई।
निर्णय कै बतिया न चलेली,
भरे दरबार में होले ओझाई।
हाथ उठाइ कहउँ मत आपन,
जउ अइसइ चलिहैं ठकुराई।
न्याउ के भीखि बदे अब तात,
तोरे दरबार में ना केहु आई।

---

१. दुर्योधन का छोटा भाई।

द्यूत सभा में मात्र विकर्ण ने ही इस कुकर्म का विरोध किया था। श्रेष्ठ भूपालों तथा गुरुजनों की इस भरी सभा में जो न्याय संगत आक्रोश इसके द्वारा व्यक्त हुआ था उसका किसी के पास कोई उत्तर नहीं था। इसकी गणना कौरव पक्ष के ग्यारह महारथियों में की जाती थी। मात्र इसी ने सभा को संबोधित करते हुए प्रश्न किया था :

साधारणी च सर्वेषां पाण्डवानामनिन्दिता।
जितेन पूर्वं चानेन पाण्डवेनः कृतः पणः॥
इयं च कीर्तिता कृष्णा सौवलेन पणर्थिना।
एतत् सर्वं विचार्याहं मन्येन विजितामियाम्॥ (आदि पर्व)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करत अदालत से जवनि गोहारि बाटै,
धर्म क अकेलि नाहीं साझे क सुनारी बा।
हारि गइलें अपुना त कौन अधिकार एन्है,
मोरे जान द्रुपद कुमारी नाहीं हारी बा।
महरानी द्रौपदी तरक इहाँ मति करऽ
तरक के बदले में देत सब गारी बा।
न्याउ इहाँ नाहीं बा, गोहारि कहीं और करऽ
हम काउ करी भाई भयल जुआरी बा।

एकइ पापी से डोंगी बुड़ै,
यहँ पापी अनेकन बाटें जहाज में।
कर्ण क मंत्र न थोर रहा,
ममवाँ बनि कोढ़ समायल खाज में।
पांड के जेठि पतोहू क ई जब–
दुर्गति होत बा बीच समाज में।
दीनन के मेहरारुन कै प्रभु
लाज बचावैं जुआरी के राज में।

---

¹"द्रौपदी पांडवों की समान रूप से पत्नी है, न कि मात्र युधिष्ठिर की। पहले वे स्वयं को हार चुके थे, उसके बाद द्रौपदी को दाँव पर रखा है। सभी दाँवों को जीतने की इच्छा वाले सुबल पुत्र शकुनि ने ही द्रौपदी को दाँव पर लगाने की बात उठाई थी। इन बातों पर विचार करके मैं कृष्णा को जीती हुई नहीं मानता।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्रुपद के बिटिया क पांडु के पतोहू क औ,
दुरगति होत बाटै मोरी भउजाई कऽ।
मनई क नाहीं, दरबार ई कसाइन क,
गति भइलीं तोर[1] जइसे दीन-हीन गाई कऽ।
माफ करऽ भउजी तूं लागत बा लाज हमैं,
कइसे कहीं ई सभा हौ मोरे बड़ भाई कऽ।
बार-बार मोर मन करेला जे[2] कहि देईं,
काहे नाहीं कोखि जरि गइलीं मोरी माई कऽ।

आगम मों जानि गइली, खूब पहिचानि गइली,
कुरुबंस कमल पड़ल बा तुसार में।
भीषम के, द्रोण के, आ तोहरे भी मुँह पर,
थूकि देई तात[3] इतिहास दिन चार में।
कल्प सत तकि ओहि पार मति किहऽ प्रभु,
बोरि दिहऽ भले बयतरनी की धार में।
कौरव के छोरि बरु रौरव में भेजि दीहऽ,
जनम न दिहऽ नाथ अस परिवार में।

१. तुम्हारी (द्रौपदी) । २. कि । ३. दुर्योधन के प्रति संबोधन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूइँ अस माई, असमान अस बाप रहै,
भय हरै भाई मन बिमल बिचार दऽ।
बस में सपूत रहै, बल में अकूत रहै,
सस्त्र और सास्त्र दुनहूँ क जनकार दऽ।
बाप क पगड़िया जे ऊँच राखै सभवा में,
बेटी अस बेटी दूनउँ कुल उँजियार दऽ।
जवने के देखि-देखि देवता तरसि जालें,
जिनगी जौ दऽ त नाथ अस परिवार दऽ।

दूध बदे पूत रहै,[1] पूत बदे दूध रहै,
छोट-बड़ बस रहै तैसन दुलार दऽ।
माई जस गाई रहै, गाई जस माई रहै,
उपराँ से सरग जमीन प उतार दऽ।
पानी अस सासु रहै, मछरी पतोहु रहै,
गंगा अस निरमल मन में विचार दऽ।
जवने के देखि-देखि देवता तरसि जालें,
जिनगी जौ दऽ त नाथ अस परिवार दऽ।

---

१. पुत्र का जीवन माँ के दूध का मूल्य चुकाने के लिए समर्पित रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुसल औ छेम रहै, व्रत रहै नैम रहै,
आपुस में प्रेम रहै, सबके उदार दऽ।
मन निरदोष रहै, आपन भरोस रहै,
सुधर परोस रहै, भाई बीरयार[1] दऽ।
गरुहर[2] मंच पर बतधर[3] पंच रहै,
घर-घर में असरदार सरदार दऽ।
जवने के देखि-देखि देवता तरसि जालें,
जिनगी जौ दऽ त नाथ अस परिवार दऽ।

टंगरी[4] पसारि जेकरे भरोसे सोवैं सब,
देसवा के मेड़[5] पर बीर रखवार दऽ।
एहो जगपालक ! तू बालक प्रजा कऽ
माई-बाप अस पालक सुखद सरकार दऽ।
राति भकसावनि[6] बटोहिया चलत रहैं,
बहू-बेटी निरदुंद मति, बटमार दऽ।
जवने के देखि-देखि देवता तरसि जालें,
जिनगी जौ दऽ त नाथ अस परिवार दऽ।

---

१. शक्ति शाली। २. गम्भीर। ३. वचन पर अडिग रहने वाला।
४. पैर। ५. सीमा। ६. भयानक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करतब अपन-अपन मिलि पालें सब,
छल न कपट रहै अस बेवहार दऽ।
लाभ लेइँ उचित, उचित हानि सहैं अस
सेठ-सहूकार द बनिज-बनिजार[1] दऽ।
कवनों न काँच रहै, साँच के न आँच रहै,
पतिव्रत पालें नारी बीर भरतार दऽ।
एतना जौ दऽ त नाथ राखऽ परिवार
ना तऽ[2] हाथ जोरि कहीले उतारि ओहि पार द

सीय के रोवत देखि अकास में,
आँखी के आगे न पाप सहइलें।
रावन - गीध में का समता,
बस पाँखि औ चोंचन से लड़ि गइलें।
देस उहै, सब लोग उहै पर,
ऊ दिनवाँ कहवाँ चलि गइलें।
लाज बचावै बदे पर नारी क,
भारत में गिधवउ[3] मरि गइलें।

---

१. व्यापारी। २. नहीं तो। ३. गीघ भी (जटायु)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरम न रहि गइलीं, लाज बीज खोइ गइलीं,
काहे नाहीं करिखा लगाइ लेतें चेहरा।
देखि परनारि के ठठाइ के हँसलें सब–
लोग, भाड़ बीच जस फूटेला फुटेहरा[1]।
कस जुग रहल आ कस लोग रहलन,
इहै देस हवे, अब लोग भइलें मेहरा।
सुनीले जे त्रेता बीच सीता भउजाई क,
अभूषन न चीन्हि पउलें लछिमन देवरा।

अचरज भैल किछु लोग अस कहलेनि,
"कीचड़ में कहवाँ कमल खिलि गइले।
कोइला की खानि से निसरि अइलें हीरा अस,
नाहीं अन्हियार बीच सुरुज समइलें।
तोरे अस कोखि कहाँ मिलिहैं गँधारी,
मोरे जान धृतराष्ट्र के ई पूत नाहीं भइलें।
एक बेरि फेरि हरिनाकुस के आँगन में,
बनि के विकर्ण पहलाद चलि अइलें।

१. भुना हुआ समूचा चना जिसका छिलका तो फट गया हो किन्तु चने से अलग न हुआ हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जइसे कठोर पहाड़न ऊपर,
अंकुर पाथर फोरि कढ़ेला।
तइसे विकर्ण तोहै अस पूतन,
से ही नई-नई क्रांति उठेला।
तोरे समान जवानन से कुल,
गाँउ औ देस-समाज चलेला।"
ई सुनतै बुढ़वा कहलें किछु,
'आयु हमारि लेइ जीयऽ बघेला।'

बोलल कर्ण विकर्ण से "तैं,
लड़िका होइ के बुढ़वा बनि गइले।
बोलत बा तनिकउ केउ ना,
बड़का सब बाटै कहाँ चलि अइले?
और सबै कुलबोरन बा,
कहिया[1] से तैं बंस उबारन[2] भइले?
काली क बालक तें कहिया-
जनमें कब धर्म उधारन[3] भइले?

---

१. कब। २. उबारने वाला। ३. उद्धारक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोट बनउलेनि राम त का,
बड़का बनि गइले आ नीति उलाटे ?
ई करनी कहावाँ सिखलें,
बड़ भाइन कै बतिया कस काटे ?
का बोलतै रहबे, न चुपाबे,
विकर्ण तें ना मनबे बिनु डाटे ?
जाइके बइठु समउरिन[1] में,
नहकै ठेपवा अस ठेपत बाटे[2]।"

"पाँच पती रहलें तोहै थोर,
चलऽ अब सौ-सौ पती मलि गइलें।
चौसर ना हरलें धरसू,
तोहरे पर राम सहायक भइलें।
ध्यान स्वयम्बर कै कइ लऽ,
तोहई बदे द्यूत क सिंधु मथइलें।
तूँ दुरजोधन की जंघिया
बइठऽ अब ई दिन सामने अइलें।

१. हम उमर वाले। २. छोटे मुंह बड़ी बात करने के भाव का मुहावरा। जिसका प्रयोग अब लुप्त हो रहा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्म - अधर्म कुलीन बदे,
बड़का-बुढ़वा कहि गइलन किस्सा।
कइसन लाज लिहाज कहाले,
अरे द्रौपदी ठहरे तइँ बेस्सा।
जइसइ पाँच पचास उहै,
लगे बारबधू में बजार क हिस्सा।
निर्णय जानु एही अधिकार से,
देलेसि तोके दुसासन घिस्सा[१]।

अइसइ बानि[२] परे किछु काल में,
धर्म तोहार इहै बनि जइहैं।
दासी बनऽ, कभी एन[३] कभी-
कभी ओन[४] तोहै सेजिया प बोलइहैं।
सील - संकोच तियागइ परे
सुधि पाँचउ भतारन कऽ भुलवइहैं।
केस खिंचायल बा अबहीं,
मन धीर धरऽ अब सारी खिंचइहैं।

१. दरेर। २. आदत। ३. ये। ४. वे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अउरन के छोड़ऽ एहँ बइठल भतार सब,
इहो लोग तनिकउ सहायक न भइलें।
नाउँ धर्मराज पर एनके न लाज,
तब सोचलें न किछु जब दाउँ पर धइलें।
पतिनी क धरम तूँ छोड़ऽ चाहे धरऽ,
तोर पति त जुआ में खूब धरम कमइलें !
तुहीं बोरऽ[1] तुहईं उबारऽ[2] आजु तोहै बदे,
पति नाहीं पाँचउ बिपति बनि गइलें।

एन्हने के बिपति क ओर-छोर नाहीं बाटै,
दुधवा के माखी अस एन्है अलगाइ दऽ।
रहल संजोग तब तक साथ निभि गैल,
एन्हने के भीखि माँगि नून-रोटी खाइ दऽ।
सउ भाई कौरव के बीच में कुलेल करऽ,
पाँचउ भतारन के मन से भुलाइ दऽ।
डाँकि-फानि[3] द्रौपदी एहर[4] अब चलि आवऽ,
जौन नाइ[5] डूबि गैल ओकरा[6] के जाइ दऽ[7]।

---

१. डुबाओ। २. उबारो। ३. कूद फाँद कर। ४. इधर। ५. नाव। ६. उसे। ७. जाने दो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठाट-बाट हारि गइलें, राजपाट हारि गइलें,
भीखि माँगि-माँगि अब दिनवाँ बितइहें।
किछु नाहीं पास बाटै, सब किछु नास बाटै,
एहि जिनगी में अब तोहके न पइहें।
पहिले क दिनवाँ भुलाइ बिसराइ दऽ तूँ,
तोहरी जिनिगिया में फेरि नाहीं अइहें।
नाउँ सेस रहि गैल, गोत सेस रहि गैल,
बिपति परे प इहो दीप बुति जइहें।"

"पाँच बघेलन कै बघिनी,
जियतै एनके केहु कइसे क डाहे।"
कर्ण के आगे सुनावत बा कि,
'सियारे के बाघे क मेहरि चाहे।'
द्रौपदी बा मरले मेहना,[1]
हनुमान उठाइ के पाथर ढाहे।
'दू-दू दयादन[2] के रगड़ा-
झगड़ा में कुजाति[3] समायल काहे ?'

१. ताना। २. पट्टीदारों। ३. सूत पुत्र (कर्ण)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रघुबंस बहू क परीक्षा मोर बाप लेलें,[1]
अग्निबंस से त रवि बंस भी लतार[2] बा।
सूत-पूत तोर कौन बंस बीच बंस बाटै,
पूर ठकुरान मोरे बंस से उतार बा।
जौनी अगिया में तपि पावन भइल सीय,
तौनी अगिया से भैल जनम हमार बा।
सती-अनसती जेके चाहीं तेके हम कही,
हमैं कहे बदे केहू के न अधिकार बा।"

"ऐंठल ना गइलें अबहीं—
रसरी जरि गइलिनि देत बा गारी।
कौने प्रपंच में तें पड़ले;
हम पंच बड़ा चले बात हमारी।
बोलल बा दुरजोधन, "भाई—
दुसासन एकर खींचि ले सारी।
जाँधि एहू क उघारि रहै,
बइठइ हमरउ रहे जाँधि उघारी।"

---

१. याज्ञसेनी यज्ञ से उत्पन्न होने के नाते अग्नि वंश की कन्या थी। अग्नि ने ही सीता जैसी सती की परीक्षा ली थी। द्रौपदी को इस बात का स्वाभिमान होना स्वाभाविक था। २. नीच।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोचलीं रानी मनैं मन हाइ,
बिपत्ति क बाटै कि नाहीं सबेरा।
द्रौपदी ओर दुसासन धावल,
दीपक पै जस घोर अँधेरा।
बाहँ फुलउले बढ़ा अगवाँ,
हथिया जस धावले देखत केरा
पूरी सभा के देखाइ के देलेसि,
घींचि के केस करेर देरेरा।

छूटल केस हौ की जमुना–
लहरी तजि आइल बाटीं त्रिबेनी।
की भुइँ से सरगे तकि लागलि,
संतन खातिर पुण्य निसेनी।
बार निहारि लजाइल बा रति,
कइसन पूरुब जन्म क देनी।
ई सुघराई समाई कहाँ?
ढुरि एँड़ी के चूमत बाटइ बेनी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दाँत तरे अँगुरी केहु दाबलीं,
अउ केहु दाँतन से नख खोंटइ।
तेल फुलेल बड़ा कइली,
तबहूँ केसिया मोर छोट क छोटइ।
'अइसन केस कहाँ हमरे',
सबकै हियरा जियरा में कचोटइ।
बैरिनि देखि जरइ लगलीं,
बरवा छुटलें तरवा[1] तकि लोटइँ।

माथ पर हाथ बाटै, हाथ पर माथ बाटै,
हाथ-माथ साथ बाटै और किछु नाहीं बा।
ऊपर निहारलीं त गायब अकास बाटै,
निचवाँ अलोप अपनइँ[2] परछाहीं बा।
जेकरी पुतरिया से बड़-बड़ काँपि गइलें,
तेके बिनु पुछले निहारै के मनाही बा।
मन उड़ि-उड़ि जाले पीत पट वाले पर,
रहि गैल ओनहीं की बहियाँ क छाहीं बा।

१. तलवा। २. अपनी ही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बचन इयाद भइलें मन में वियास जी क,
एक दिन कहलेनि दाढ़ी पर हाथ देइ।
"विपति में कवनो जौ असरा न रहि जाइ,
तब सबके तियागि ओनके[1] बोलाइ लेइ।
मन बीच पीर भरि नयनन नीर भरि,
ओहि दरबार में बिलाप पहुँचाइ देइ।
छटपटी[2] परि जइहैं, सुनतइ चलि अइहैं,
जौन मन करै तब तवन कराइ लेइ।"

पानी जात बाटै पानीदरवा के आगे चलु,
ऊ अनंत सागर, ई छोटि-मोटि झील रे।
न्याउ जहाँ बाटै, अनियाउ तनिउँ नाहीं बाटइ,
ओहि दरबार में न खरचा बकील रे।
साँच दरखास साँच मनवाँ क पहुँचेली,
कागज न लोगेला न मुहर न सील रे।
द्रौपदी क मन बार-बार कहै अब तनी,
बड़की कचहरी[3] में कइ दे अपील रे।

१. कृष्ण के प्रति संकेत। २. छटपटाहट। ३. श्रीकृष्ण की अदालत में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एन्हने को आँखिन में पानी नाहीं बाटै तनिउँ,
भइँस के आगे बीन नाहक बजावले।
'हमके नियाउ चाहे, हमके नियाउ चाहे,'
कहि कहि कभी एने, कभी ओने धावले।
अब कब काम आई बड़की अदालत ऊ,
कस नाहीं आजु तनी ओके अजमावले।
हाकिम तोहार भाइ सबसे प्रधान बाटैं,
काहे चपरासिन से फैसला करावले।

मन कहै बार-बार बिहरि करेज जइहैं,
जौने छन बदरा के आगे रोइहैं नदी।
तनिक बिलपि देबे, बिलपि बुलुकि देबे,
पदी तहीं मानि जाबे अउर सब कुपदी।
बड़-बड़ लोगन क बात अजमावलि बा,
ओनहीं के आगे आजु होये दे लगाबदी[1]।
सही जउ होबे[2] तब हारइ क सवाल नाहीं,
गलत भी होबे तबउ जीति जाबे द्रौपदी।

---

१. लागा डाटी। २. होगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नारद-वियास सबही क विसवास सब,
ओनहीं क नाउँ लेइ बहकलें[1] एतना।
बार-बार सासु मोरि अलगे सिखउलिनि
'बिपति में ओनहीं के याद किहू किसुना।'
भीम और द्रोण धृतराष्ट्र आजु जानि जाइँ,
सभवा में देखि लेइँ सरदार जेतना।
लाज मोर नाहीं जाई! नाहीं जाई! नाहीं जाई!
देखै सब भाई मोर पानीदार केतना?

तर्क - बितर्क तियागि दे रे मन,
नाहीं संदेह बा एकउ कना[2] कऽ।
दूरि दुआरिका बा मनलिउँ पर,
फाल बड़ा ओनके[3] चरना कऽ।
बाती समान हिला हियरा,
मन में सोचलीं गज के सरना कऽ।
आँटल नाहीं भुगोल तनिउँ,
अस बा इतिहास मोरे विरना कऽ।

---

१. बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। २. कण। ३. कृष्ण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीयत बा जबले भयवा,[1]
एहसान न आन क माथे चढ़इबै।
गाढ़े में भारी भरोस हमार,
ओन्हैं तजि के के भला गोहरइबै।
पाँच पती पर अइसी गती,
एहि देस में साँझहिं आगि लगइबै।
सासुर में सब कायर बा,
अब नैहर से बिरना बोलवइबै।

नाहर बीरन बा हमरे,
हम काहे सियार निहारि पराबै।
साँस में साँस रहे जबले,
मै दुसासन! भीखि दया कन खाबै।
यज्ञ की बेदी से मैं कढ़लिउँ,
बलिवेदी के कुण्ड भले पटि जाबै।
ना मुड़बै, झुकबै न तनिउँ,[2]
भलहूँ[3] टुकड़े-टुकड़े कटि जाबै।

१. भाई। २. तनिक भी। ३. भले ही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जौन कि आन बदे अनहोनी,
ओन्है बदे तौन हौ खेल-तमासा।
बाटै[1] हमैं बिसवास दुसासन,
अंत में तोहू के होइहैं निरासा।
जइसे गोवर्धन लेइ रखलें ब्रज,[2]
पूरल[3] नाहीं सुरेस क आसा।
पानी पड़े गलि जइहैं कतउं,
जनलें मोरे बंधु के इन्द्र बतासा।

खींचु दुसासन जोर लगाइ के,
टेर हमार जौ ओ सुनि पइहैं।
भउजी की गोद में होइहैं तबउ,
बिसवास हमैं हरि नाही भुलइहैं।
टेर सुने न अबेर लगे,
रहिया में कतउँ थिर ना रहि पइहैं।
नार नदी, बन डाँकत रे,
बनि के हिरना, बिरना चलि अइहैं।

---

१. उसी प्रकार। २. व्रज की रक्षा की। ३. पूरा हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चारि पती मुड़िअइलन[१] पंचम-
पारथ भी बनि गइलें बेचारू[२]।
आन के हाथ से आपन नारि,
उघारि लखें चटकै नहिं तारू[३]।
अइसे में ना बिसरइहऽ तुहूँ,
पति देवै प[४] पांडव भइलें उतारू।
कीमति का जनिहैं एन्हनें,
मछरी मरलें पउलें मेहरारू[५]।

मोछि मुरेरत, आँखि तरेरत,
पापी के केहू निरेखत नाहीं।
झाँकत ब हमहीं के सबै,
ओकरी ओरियाँ केहू देखत नाहीं।
सासु, जेठानि खड़ी देवरानि,
दुसासन के केहु छेंकत नाहीं।
हे बिरना ! हमरे उपराँ,
फटहिउ[६] धोतिया केहु फेंकत नाहीं।

१. जान बूझ कर अन्याय का प्रतिकार न करना। २. जिसके पास कोई चारा न रह जाय। ३. चुप्पी साधना। ४. इज्जत देने पर। ५. द्रौपदी-स्वयंबर में लक्ष्यवेध हेतु कृतृम मछली टाँगी गई थी। ६. फटी हुई भी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लागत केहू गोहारि न बा,
खड़े ठाकुर एक से एक सगोती।
आँखि घुरेरत बाटैं दुसासन,
बाज लखै जस सूधि[1] कपोती।
तोरे बिना केहु सूझत ना,
तनी ठोंकि के छाती सँकारु[2] चुनौती।
द्वारिका ओर किहे मुँह द्रौपदी
ढरलीं मोती, निहारीलीं धोती

नंगी हमैं सब देखन चाहलैं,
'घींचि ले धोती' इहै चरचा बा।
जानउँ न मैं बिरना मोरी भागि में,
कइसन काउ[3] विधान रचा बा।
एक तोहै तजि देस - देसन्तर,
कै ठकुरान एहीं ठकचा बा[4]।
बीरन, जादव बंस क नाहर,
खाली[5] भरोस तोहार बचा बा।

---

१. सीधी। २. स्वीकार करो। ३. क्या। ४. अत्यधिक भीड़ का एकत्र होना। ५. केवल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तोहरे जियत तोरि बहिनी उघारि होली,
धाइ-धूपि[1] आपन पितम्मर ओढ़ाइ दऽ।
आजु सब जानि लेइ केकरि बहिनि हम,
भाइ ! तनी एन्हने क मद भुलवाइ दऽ।
छोटि-छोटि नाहीं तोर बड़ि-बड़ि बाहँ-बाटैं,
एक त एहर एक ओहर बढ़ाइ दऽ।
हमहूँ से ढेर केहु बिपति में होइ तब-
एतनइँ कहब दूनों साथैं निपटाइ दऽ।

रीति रजस्वला[2] बान्हलि बा कि,
पराई बचाइ चलैं परछाहीं।
बेदन बा करिहाउँ में वेधत,
डोलत की गोड़वा थहराहीं।
पंचन कै मति मारलि बा,
बिरना ! बहिनी गहै केकरि छाहीं।
अइसे में घींचत बा केसिया,
जब आपन भी पति छूवत नाहीं।

---

१. तीव्रता से दौड़ना। २. जिस समय द्रौपदी दुशासन द्वारा बलात सभा में लाई गई, उस समय वह रजस्वला थी :—

सा कृष्यमाणा नमितांग यष्टिः शनैरुवाचाथ रजस्वलास्मि।
एकं च बासो मम मन्द बुद्धे सभां नेतुं नार्हसि मामनार्य॥
[आदि पर्व]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाढ़े में जउ बिसरइबऽ हमैं हरि,
जा तोहसे हम बोलब नाहीं।
तू बहिनी - बहिनी कहबऽ,
हम नात कबउँ फेरि जोरब नाहीं।
सावन में तोहै बान्है बदे,
जरई फेरि ताल में बोरब नाहीं[1]।
पूस में लेइ खिचड़ी अइबा,
गठरी सड़ि जाये पै खोलब नाहीं[2]।

---

१. पश्चिमी भोजपुरी एवं पूर्वी अवधी के गाँवों में यह प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है—बहनें नागपंचमी के दिन मिट्टी के पिंड में गेहूं या जौ गोद-गोद कर लगाती हैं। इसे 'जरई' या 'जई' कहते हैं। कजली पर्व (भाद्र कृष्ण तीज) के दिन इस पिंड को समीपवर्ती जलाशय में डुबोकर मिट्टी छुड़ा दी जाती है। बिरवे को भाइयों की शिखाओं में बाँधा जाता है। इसका महत्व रक्षा-बंधन से कथमपि कम नहीं माना जाता। यद्यपि यह पर्व भादों में पड़ता है किन्तु इसकी गणना सावन में ही की जाती है। २. मकर संक्रांति को 'खिचड़ी' का पर्व मनाया जाता है। भाई अपनी बहन के घर 'खिचड़ी' लेकर जाता है। यह पर्व भी भाई-बहन के स्नेह का पर्व है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वीरन औ बहिनी के सनेह–
सनी गितिया फेरि गाइब नाहीं।
भीखि भले मगबै, मुँह–
नैहर-सासुर बीच देखाइब नाहीं।
गाढ़ - सकेत परे केतनउँ,
बिरना तोहके गोहराइब नाहीं।
"केकरि तूँ बहिनी ?" पुछले-
पर नाउँ तोहार बताइब नाहीं।

एकै प्रदुम्मन[1] ना रहिहैं,
अबहीं बिटिया-बेटवा बड़ होइहैं
सौरि पोतावइ[2] बदे हमके,
तोहै भेजि के भउजी जरूर बोलइहैं।
तौने दिना हम जाइब ना,
पुरखा भी तोहार मनाइ न पइहैं।
तूँ गोड़वा परबऽ हमारे,
पर सौरि बिना पोतले रहि जइहैं।

---

१. प्रद्युम्न (कृष्ण का पुत्र)। २. हमारे गाँवों में भाई को जब पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है तो प्रसूति गृह की सफाई के लिए बहन को बुलाया जाता है। बहन आती है और मन चाहा नेग पाने के पश्चात् सौरी पोतती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूजि क पर्व लगे हमरे–
कर से अब भाई मिठाई न पइबऽ।
वीरन जइहैं सबै बहिनी घर,
बैठि दुआरिका में पछतइबऽ।
आवइ के का अइबऽ न कबउँ,
पर ना द्रौपदी के तूं जीयत पइबऽ।
के सुनिहैं 'किसुना'[1] तब के के,
कहऽ 'किसुनी'[2] कहि के गोहरइबा ?

तीज परे तेउहार परे,
तोहसे फेरि धोती मगाइब नाहीं।
आन के आगे भले झुकबै,
करबै तोहसे फुरमाइस नहीं।
मौर बँधे भगिना के सिरे,
इमिली तोहसे घोंटवाइब नाहीं[3]।
पूत वियाहन तूं चलबऽ
हम काजर आँखी लगाइब नाहीं[4]।

---

१. कृष्ण। २. कृष्णा (द्रौपदी)। ३. बेटे के विवाह में इमली घोटाने की प्रथा है। यह भी भाई-बहन के स्नेह की प्रथा है। ४. भाई का बेटा जब दूल्हा बनता है उस समय बुआ उसकी आँख में काजल लगाती है और नेग प्राप्त करती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइलऽ न बीरन का भइलऽ,
पगड़ी अब डूबत बाटै पिता की।
बोलब दूरि रहा, द्रोपदी-
फेरि भूलि दुआरिका ओर न ताकी।
माफ किहऽ कहलो-सुनलो[1] सब,
जीवन कै अब होत बेबाकी।
राखी बँधावइ बदे हमैं ना-
पइबऽ, पइबऽ बस राखी चिता की।

अइसै करै के तोहै रहलें,
हमके नहँकै भगिनी तूँ बनायऽ।
आजु से टूटल्र नात हमैं,
बहिनी कहिके न कवउं गोइरायाऽ[2]।
मै तोहके मुँह नाहीं देखाइब,
जा तुहऊँ[3] हमके न देखायऽ।
चक्रसुदर्सन, संख, गदा-
तिनहूँ क अँचार नवाइ के खायऽ।

१. कहा-सुना। २. बुलाना। ३. तुम भी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फटलों न बेवाई कन्हाई तोहै,
तब का जनबऽ कस पीर पराई।
दोष तोहार न बाटइ जन्मत,
लेलेसि बाप कपारे चढ़ाई[1]।

कंस के जेहल में रोवतँ–
तजि के चलि गैल जे आपन माई।
भैल न जे अपनी महतारी क,
ते कबौं आन क होइहैं न भाई।

जइसन कौरव, तैसन पांडव,
दूनों बड़ा कइलें अनरीती।
आपुस में मिललें दुनहूँ !
बिरना हमहीं भइली जग तीती।
कौन सुआरथ बा हमसे,
तुहकँ अनलऽ हमें [illegible] रीती।
बा जग में बेवहार इहै हरि,
स्वारथ लाइ करैं सब प्रीती।

---

१. सिर चढ़ाना–कृष्ण के जन्मते ही यह मुहावरा सार्थक सिद्ध हो गया था। वसुदेव जी शिशु को कंस की कारा से छिपकर जब नन्द के यहाँ ले जाने लगे तो रास्ते में यमुना पड़ीं। उस समय पिता ने पुत्र को शिर पर उठा लिया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नइहर सासुर से अपया हम,
राम के धाम में मउवति[1] नाहीं।
कइली गुमान बड़ा तोहरे पर,
नाहक गइली मैं ताड़ की छाहीं।
ना केहु बीरन, ना बहिनी अस–
आजु से रीति चले जग माहीं।
हे बिरना तब का करबऽ ?
पपिया जब डारि दिहैं गरबाहीं।

कइलऽ अबेर कहाँ एतना ?
अब धाइ दुसासन आगे बढ़ा बा।
बाबउ[2] ना बरजऽलें[3] तनिउँ
जंघिया खोलले मोर बइरी खड़ा बा।*

पानी क होत कमी तब जूझिति,
पानीं के ऊपर गढ़ परा बा।
छत्रिन के एहि देस मे तोरे–
बिना लोहुआ क अकाल परा बा।

---

१. मृत्यु। २. भीष्म बावा भी। ३. मना करते हैं।

*दुर्योधन ने अपनी बाईं जाँघ खोलकर द्रौपदी को उस पर बैठने के लिए संकेत किया। महाभारत में ऐसा वर्णन आया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना भइलें अस होइहैं कबउँ न,
करउँ बइरी घर जाइके सेवा !
आँचर जाइ पसारउँ कहाँ,
तजि एक तोहै हमरे कहऽ के बा ?
छत्रिन कै दल देखत बा,
बिरना अनरीति बड़ी कइले बा।
जौने में फूल गुहै तोर मीत,
उहै केसिया बइरी धइले बा।

लागत बा अबहीं ऋषि धौम्य,[१]
इहै केसिया नहवावत बाटें।
पारथ एके सजावइ बदे,
हमरे संग बेनी गुहावत बाटें।
कइलिउँ मान मनावइ बदे,
मिलि पाँचउ जने सुरझावत बाटें।
तौने के खींचत बाटै दुसासन,
दुर्दिन राम देखावत बाटैं।

१. पांडवों के पुरोहित। राज सूय यज्ञ में इन्होंने तीर्थों के पावन जल से द्रौपदी के केशों को अवभृथ स्नान कराया था।

ये राजसूयावभृथे जलेन महाक्रतौ मंत्र पूतेन सिक्ताः।
ते पांडवानां परिभूय वीर्यं बलात् प्रभृष्टा धृतराष्ट्रजेन॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जुग की एहि ऊँचि अदालत में,
अपराध बिना अपराधिनि भइलूँ।
खोलि के जंघ देखावत बा,
गनिका-कहिके गोहरावलि गइलूँ[१]।
जे बड़का ससुरू - भसुरू,
सबके अगवाँ गइलूँ, पछतइलूँ।
हे बिरना जहँ गइलूँ तहँ,[२]
कुकुरी[३] अस मैं दुरियावलि[४] गइलूँ।

गारी क चोट करेजे में सालत,
घाउ लगैं सब बायल[५] नाहीं।
छत्रिन के एहि पंघति में,
सब लोग हँसैं केहु घायल नाहीं।
ई दुख बीरन से कहतै केउ,
अइसन दाही[६] देखायल नाहीं।
सोचि के रोवलीं द्रौपदी जेकर,
बंधु बिपत्ति में आयल नहीं।

---

१. बुलाई गई। २. वहीं। ३. कुतिया। ४. दुत्कारी गई। ५. निशाना चूकना। ६. संवेदन शील।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँसुन में बुड़लीं बरुनी,
मधु में जस बाझलि[1] बा मधुमाखी।
बोललीं ठाढ़ि जहाँ टँगना में,
टँगा रहलें बन कै बनपाँखी।
मानव दानव से बढ़लें,
सब देखत बाटऽ तुहूँ भरि आँखी।
तोड़ि के लोहन कै पिंजरा,
उड़ि के ब्रिरना से भरऽ मोरि साखी[2]।

कर्ण, दुसासन अउ दुरजोधन,
बात - कुबात कहैं किसुना से।
भागि में जानउँ न काउ बदा,
एन्हनें खेलिहैं हमरे बसना से।
निर्णय द्रोण गुरु न करैं,
नहि अइसन आस रही बभना से।
जा तुहइँ[3] सुगना - मयना,
बहिना क बिपत्ति कहऽ बिरना से।

१. फँसी हुई। २. मेरी स्थिति से अवगत कराओ। ३. तुम्हीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनवाँ क[1] सुधि कइसे मनवाँ से भूलि गइलऽ,
नील रंग वाला नभ कहाँ छोड़ि अइलऽ ?
पुरुब जनम में भयल होई भारी पाप,
लोहन के पिंजरा में आइके समइलऽ।
पिहुँकब[2], कुहुँकब[3], चहुँकब[4] सब छोड़ि,
हमरी बिपतिया में मौन होइ गइलऽ।
जानि गइली हम तुहूँ भीखम बबा की नाईं,
पापिन क अन्न खाइ पापी बनि गइलऽ।

सूझत ना किछु बा मनमें,
भरलीं अहिया[5] सुधि खोवन लागीं।
आँसुन धार में बूँद देखालें कि,
पानी में मोती पिरोवन लागीं।
आँचर भींजल बा अब तउ,
धरती मतवा के भिंगोवन लागीं।
चित्र उरेहल पाँखिन के–
अगवाँ पगली अस रोवन लागीं।

---

१. वन। २. विवँकना। ३. कुहुकना। ४. चहकना। ५. आह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आंचर घइलेसि रे पपिया,
दुरजोधन पीटत बाटइ तारी।
खींचिले खींचिले हाली से खींचिले,
कर्ण सुनावत बाटइ गारी।
कइसे कहउँ कहि जात न बा किछु,
लाज क बात जहाज से भारी।
आइ के का करबऽ बिरना,
अब नाभी से छूटन चहले सारी।

घाइ के ना अइब, मन में–
करबऽ जौ खियाल कड़ी बतियाँ कऽ।
दाह पुरा जइहैं[1] तोहरे
अछतइ[2] जउ बैरिन की छतियाँ कऽ।
आइ के ना करबऽ द्रौपदी पर,
जउ छहियाँ अपनी बहियाँ कऽ।
लोग इहै लछना[3] देइहैं,
बिरना रहलऽ हरि सौतिनियाँ कऽ[4]।

१. जलन दूर हो जायेगी। २. रहते ही। ३. कलंक। ४. सुभद्रा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंखिया से कजरा ढुरल कि अकसवा से,
बदरा चोराइ लोरवा में घोरि देहलीं।
दाँतन से अधर चबाइ फुफकरलीं,
कि ओठवा प ललका अनार फोरि देहलीं।
पांडव से, भीषम से, द्रोण से बिदुर से भी,
मुँह मोरि रोइ-रोइ मन मोरि लेहलीं।
"कहाँ जाई, कस करी, जस चाहे तस होइ",
मौन होइ सब बिरना प छोड़ि देहलीं।

छोड़त खींचत साँस सरोतर[1],
जइसे चलेली लोहारे क भाथी।
जइसे कोहाँरे क आवाँ जरेला,
लगी धधकइ धुधुआइलि छाती।
देह चिता बनि जातै अबै,
नयना भइले बदरा बरसाती।
ई त कहऽ[2] ढुरलें लोरवा अब,
एकेक[3] आँखी से नउ-नउ पाँती

१ निरंतर २ यह तो कहिए ३ एक-एक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"इन्द्र क ई कोप नाहीं मन में बिचारि लेबऽ[1],
कानी[2] अँगुरी पर गोबर्धन उठाइ लेब[3]।
गोपन के, गोपिन के, गाइन के नीचे राखि,
पनियाँ बरसले प बहइ से बचाइ लेब।
द्रौपदी क टेर हौ गोहारि लगही के परे,
आँसुन क बल बाटे आँसू ढरकाइ देब[4]।
खाली दूनउ नयन कटोरन के लोरन में,
द्वारिका निवासी तोर द्वारिका बहाइ देब[5]।

कलपति नारी बाटे अगबे[6] बेचारी बाट,
सबही से हारी बस तोर बलिहारी बा।
पांडव पियारी बाटे, बहिनी तोहारी बाटे।
पाँच-पाँच पूतन क सग महतारी बा।
ओहर से हारी बा, एहर दुतकारी बाटे,
बहुत लचारी पति मिलल जुआरी बा।
जुआ पर हारी होत सभा में उघारी बाटे,
धाइ आवऽ आधे तन सेस अब सारी बा।

१ लोगे २ कनिष्ठा ३ लूंगा ४ ढुलका दूंगी ५ बहा दूंगी
६ पूर्ण रूपेण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोहन माधव नंद के नन्दन,
हे जसुदा सुत कृष्ण मुरारी ।
गोप सखा ब्रजनाथ ब्रजेश,
गोपाल गोविन्द गोबर्धन धारी ।
ए हो मुकुन्द किरीटी सखा जय
द्रौपदी बीरन की बलिहारी ।
सौ-सौ दुसासन का करिहैं हरि,
जेकर तूँ करबऽ रखवारी ।।

जय बसुदेव क पूत बली,
जय गाढ़ सहायक रास बिहारी ।
संख-गदा तिसरे कर पद्म,
चतुर्भुज चक्र सुदर्शन धारी ।
जय मुरलीधर काली बिनासक
द्रौपदी बीरन की बलिहारी
सौ-सौ दुसासन का करिहैं हरि
जेकर तू करबऽ रखवारी ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोरपखा सिर जानुभुजा[1] जय
रुक्मिणी नाथ पितम्बर धारी।
द्वारिकाधीस प्रद्युम्न पिता जय
कंस विधंसक कुंज बिहारी।
लोक सहायक आपतिनायक
द्रौपदी बीरन की बलिहारी।
सौ-सौ दुसासन का करिहैं हरि
जेकर तू करबऽ रखवारी।

जय बलराम क दाहिन बाँह
गरीब नेवाज अनाथ सुखारी।
जय कुबजा प्रिय ऊधव के—
हितवा-मितवा दुखिया दुख हारी।
बिप्र सुदामा के बाल सखा जय,
द्रौपदी बीरन की बलिहारी।
सौ-सौ दुसासन का करिहैं हरि
जेकर तूँ करबऽ रखवारी।

---

१ आजानु बाहु

[द्रौपदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माखन चोर दही क भुखायल
पूतनापायी खगेस सवारी।
देवकी बालक नेह क पालक
राधिका रूप क प्रेम भिखारी।
जय-जय बीरन जय-जय बीरन
द्रौपदी बीरन की बलिहारी।
सौ-सौ दुसासन का करिहैं हरि,
जेकर तूं करबऽ रखवारी।।''

सपना दिनवैं[1] देखलें बिरना
बहिनी पड़लीं बड़ आफति माहीं
जइसे बोलावत ब। घिघिआइ के,[3]
अइसे कबउँ गोहरावत नाहीं।
अकुलइलें हिया, जस काँपै दिया,
अपुनइँ[4] उठि हाथ गदा पर जाहीं।
बहियाँ फरकी अंगुरी करकी,
अब चक्र सुदर्सन मानत नाहीं।

१ दधि प्रेमी २ दिन में ही ३ घिग्घी बाँधकर ४ अपने आप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

उभर बार युवा मद भार
कहाँ सँभरै हरि से हर भइलें।
अइली अबइ[1] अबहीं[2] अइलीं,
उठतइ देहियाँ तोरलें अंगरइलें।
जोस में फूललि छाती त रुक्मिणी—
की अंकवारी में नाहीं समइले।
होलें कुठाहर[3] बंधु सहायक,
नंद क नाहर बाहर अइलें।

राम के बान समान गुमान
मने कइलें गति ई नभ चीरे।
भूइं से मारलें एक फलांग,
त गइले अकासनदी तट-तीरे।
पूछलें जाइ खगेस[4] तहाँ, "प्रभु
जइबऽ कहाँ ?" कहलें बड़ धीरे।
'हा द्रोपदी ! द्रोपदी ! द्रोपदी !
द्रोपदी ! द्रोपदी ! द्रोषदी ! द्रोपदी रे !!'

---

१ अभी २ अभी ३ कुठाँव ४ गरुड़

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहलें गरुड़ "मोरि पिठिया सँभारि धरऽ
चारि पंख मारि के अकास ओरवाइ देब।
छोटि मोटि तरई क गिनती करित नाहीं
चोंचन से मारि चान-सुरुज हटाइ देब।
अमरित कुंभ बचपन में लियउली हम
आजु त जवानी बा, जवनियाँ देखाइ देब।
बनिता क पूत तब जनिहऽ कन्हाई जब,
द्रौपदी के आगे पल भर में जुटाइ देब।"

आन के ना बहिनी की गोहारि में,
भाई चला तब काहे मुड़ै रे।
मेघ फटें, रवि चंद छटें,
मिलिके तरई बिछुड़ें-पछड़ैं रे।
लोग निहारि रहे असमान में,
तीनि विमान समान उड़ैं रे।
आगे पितंबर बीच में कान्ह,
पिछाड़ी बेचारू खगेस उड़ैं रे।

गरुड़ अपनी माता वनिता को उनकी बहन (सौत) कद्रू की दासता से मुक्त करने के लिए नागों (कद्रू के पुत्रों) के कहने पर उन्हें अमर करने के लिए स्वर्ग से अमृत कुंभ लाने गये थे। इन्द्र के साथ संग्राम में विजय प्राप्त करने पर उन्हें अमृत घट लाने में सफलता मिली थी। यह परम साहसिक कार्य उन्होंने बाल्यकाल में ही कर दिखाया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहलें गरुड़ "हरि उड़ब हमार काम,
लड़ब तोहार काम, काम अलगाइ लऽ[1]।
हम तउ बाहन सवारी तू हमार बाटऽ
पेट मति मारऽ नाथ पेटवा बचाइ लऽ।
जबले संकोच हम स्वामी क करत बाटी,
तबले तूँ खूब पीत पट फहराइ लऽ।
हारि त जरूर जाबऽ सुनसान बाटै एहूँ
केहु नाहीं देखे नाथ आवऽ फरियाइलऽ[2]।"

पीत पट कान्ह क गरुड़ क सपेत[3] पाँख,
आन दिन साथे आजु अलगे हटलि बा।
कृष्ण बढ़ि जालें, कभी खगपति बढ़ि जालें,
रफ्तार केहू क न तनिकउ[4] घटलि बा।
कभी एन जीति जालें, कभी ओन जीति जालें,
नभ बीच बाजी जोड़-तोड़ में लगलि बा।
धन्य-धन्य द्रौपदी तोहार भागि तोहै बदे,
भगत में और भगवान में ठनलि बा।

१ अलग कर लीजिए २ निर्णय कर लीजिए ३ श्वेत ४ तनिक भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाँख फहरउले आवऽ हमैं पछियउले आवऽ
तुहीं हमैं धरऽ हम तोहके धरब का ?
तोहरउ जवानी बाटै, हमरउ चढ़ानी बाटै,
कौने दिन काम आई, कोठिलो भरब का ?

कान्ह फेरि सोचलें गरुड़जी दुखित बाटें,
बोललें "ल चढ़ि गइली, उड़ि चलऽ अब का ?
असरा जौ द्रौपदी क टूटि जाये मनवाँ से,
तुहीं बोलऽ खगपति जाइ के करब का ?"

कान्ह क सवारी खगपति हहकारी[1] जालें,
मारे डर तरइ में तरई धँसलि बा।
गिरि के पताल में झुराइ गैल होई कतौं,
आजु न अकास गंग उपराँ बहलि बा।
उथल-पुथल नभ मंडल में होत बाटै,
एक में निहारिका-निहारिका फँसलिबा।
सुरुज के चान हेरैं, चान के सुरुज हेरैं,
चान में सुरुज में हेरउवलि[3] मचलि बा।

---

१ पीछा करते आओ २ दुरुपयोग करना या उपयोग में न लाना (एक कहावत) हाँक लगाते हुए। ३ एक दूसरे को खोजना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फेरि हनुमान आजु लाँघत समुद्र बाटें,
सुरसा न बाटें, मयनाक सोइ गइलें।
रबि नाहीं, ससि नाहीं, लोक-परलोक नाहीं,
साफ नभ लागेला सबइ खोइ गइलें।
मन गति हारलि बा गरुड़ क गति देखि,
भरलें उड़ान त लकीर बोइ गइलें।
लोग देखि-देखि कहैं बड़ अजगूत भइलें,
देखि ल अकास दूइ टूक होइ गइलें।

बनिता क पूत सब अहँड़-बिहँड़[1] कइलें,
कइसे अब दिन होई, कइसे अब होई रात।
अरुण[2] जउ देखि लीहैं मन किछु सोचि लीहैं,
भायप[3] में निहचय रोकि दीहैं परभात।
दूनउँ सहजोर[4] बाटें तनिकउ न थोर बाटें,
अद्‌भुत दृश्य देखि अइसन बा जनात[5]।
पुरबिल[6] पुण्य अउ प्रताप से थम्हल बाटें,
नाहीं तउ आजु ई अकास भहराइ जात।

---

१ अस्त व्यस्त २ गरुड़ के सहोदर भाई (सूर्य के रथवान) ३ भ्रातृ प्रेम
४ बली ५ जान पड़ता है ६ पूर्व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और केहु नाहीं बस पवन क पूत होए,
एनकर जाहिर जगत प्रभुताई रे।
तनिउँ न मुड़ेला बस पुरुबै उड़ल जाला,
जाला उदयाचल में देखु-देखु भाई रे।
मोर अनुमान बाटै, बाल हनुमान बाटै,
लड़िका धधान बाटै सुरुज के खाई रे।
अंजनी से कहि दे बरजि देइँ पूत ना तऽ
दुनियाँ में फेरि से अन्हार छाई जाई रे।

अंखिनी पियलें झुकि, उतरी पियलें छोड़ि—
पछुआँ बढ़लें त पियलें पुरवइया।
बदरी पियलें कभी बिजुरी पियले कभी,
चोंच मारि-मारि खालें नखत-तरइया।
अरुण क भाई जब पियलें छितिज तब
बिहँसि के हंसि अस बोललें कन्हइया।
"अब त अकास दुइ चारि घोंट रहि गैल,
एहू के पियत चलऽ बढ़ि चलऽ भइया।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेउर[1] झाँकें बिकोदर के त
बिकोदर पारथ के लखि हारें।
पारथ धर्म के धर्म खड़ा—
सहदेव के ताकि लचार बिचारें।
पाँचउ लखैं फेरि द्रौपदी के,
द्रौपदी रहिया बिरना क निहारें।
भाई बदे टक बाइ लगी न
हिलें न डुलें पुतरी नाँहि टारें।

जौन बरौनी जहाँ क तहाँ,
उझपैं न झपैं न खड़ी क खड़ी बा।
सीप में नीलम सी पुतरी,
पुतरी आँखिया में जड़ी क जड़ी बा।
दुइ मछुरी ललरी-ललरी,
उजरी-उजरी, कजरी कजरी बा।
कोरन में अइलें लोरवा
ओनई बदरी के तरे बदरी बा।

---

१ नकुल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेऊ गोहारि न लागत बा,
जेकरे संघवाँ घुमलीं सतभौंरी।
तौले दुसासन बा धइले,
सर्र से सरकीं मछरी जस सौरी।
रावन से बचलीं सितला,
भसमासुर से बचलीं फेरि गौरी
भैल बड़ा अजगूत तबै,
नभ में फहराइल पीत पिछौरी।

जनमत ज्ञान आइ जाले जाने कहवाँसे,
कौन गुरु, कइसन बा, भला ई बताई के ?
कान्ह के जे जानि गैल उहै विसवास करे,
भइले विसवास तब भूले प्रभुताई के ?
लाख-लाख गाइ होईं ढोर में चरत पर
बछरू क आँखि पहिचानि जाले माई के।
बड़ी-बड़ी खिड़की से उड़त देखान किछु
बहिनी क आँखि पहिचानि गइलीं माई के।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाइ क लागत बा लवछेवर[1],
द्रौपदी नाचत-गावत बाटै।
आउरि-बाउरि जौन बकै,
दोहराइ उहै तेहरावत बाटै।
कइसे लखै केतना चितवै नभ
खाली चितौनि से पाटत बाटै।
आँखिन में अँटि गइलें अकास
अकास में आँखि न आँटल बाटै।

अइलन बीरन, बीरन अइलन,
विस्मय कारिख छाँटत बाटै।
नैनन में भरलें बिरना
बरुनी न गिरै न उलाटत बाटै।
अँखिया कजरी भइलीं ललरी,
रबि रस्मि यथा घन छाँटत बाटै।
पूरुब में उदयाचल में,
बदरी के तरें पह फाटत बाटै।

---

१ आभास।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुनियाँ रहलीं द्रोपदी, देखतइ–
बिरना के भरी गगरी बनि गइलीं।
बोली मुहाल रही त रही,
अब सावन कै कजरी बनि गइलीं।
कजरी बनले भरलें न हिया
भुइयाँ तजलीं बदरी बनि गइलीं।
बदरी बनली रहमीं देखतइ–
देखतइ घन कै बिजुरी बनि गइलीं।

बा बदली द्रोपदी अब आँसुन–
में मुसकानि मिलावत बाटै।
लागलि बाटै ठसाठस भीड़
खड़ी बिरना के देखावत बाटै।
"गइलें कहाँ अन्हरा क कपूत"
ई कर्ण के आगे सुनावत बाटै।
पीटत तारी गँवारिनि सी
अँगुरी चटकारि बिरावत बाटै।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टारत भीड़ बढ़ी द्रौपदी
जस हंसिनि पौंरत फाटत काई।
ठाढ़ि छछात लगै दुरगा
केसिया कन्हिया रहलें छितिराई।
बोललि धाइ धधाइ के बलालि,
एँड़ी उँचाइ के हाथ उठाई।
"बाटैं खड़ा बिरना अब देखब,
बाघ वियानि बा केकरि माई।"

केहु-केहु कहलेसि "अब नाहीं लाज बची,
गाइ बाटै एकली हजारन कसाई रे।"
केहू-केहू कहलेसि "मालिक त राम बाटें,
ओनहीं क पसरलि जग प्रभुताई रे"
केहू-केहू कहलेसि देखऽ अब काउ होले,
भाई आगे बहिनि, बहिनि आगे भाई रे।
बहिन त बाटै जस माखन मलाई पर
भाई क बनलि बाटै बज्जर कलाई रे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कान्ह के निहारि बोलीं बड़ हाली अइलऽहऽ,
व्यंग बान मरलीं मनावैं लगलें हरी
"कइली तेयारी नहीं, जोहली सवारी नाहीं,
धइ-धूपि अइली पुकार कान में परी।
माफ करू, माफ करू गलती भइल बड़,
सुनि अरदास ले बहिनि मोरि सुघरी।
आजु तोरे लोरन के एक-एक बून पर,
देब जरिबाना हम लाख-लाख चुनरी।"

बोललें कान्ह "धरऽ मन धीरज,
का नहकँ अकुतइलि बाटू ?
साड़ी के ऊपर साड़ी ओढ़ाइब,
काही बदे घबड़ाइलि बाटू ?
राह में पानी भी ना पियली,
तबउ गाल फुलाइ कोहाँइलि बाटू।
सारी दुआरिका हौ तोहरें,
लुगरी बदे का तू कोहांइलि बाटू ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधे क बोली भुलाइलि रे,
बिलखावन[1] टेर न तोर भुलइलें।
धावत - धूपत मैं अइली,
किछु दूरि हमैं गरुड़उ पछिअइलें[2]।
तौने[3] क ई बदला पउली,
मोहवाँ फेरलू रस-नीरस भइलें।
सोर बड़ा कइलू पहिले,
ओठवा अब मौनी बबा बनि गइलें।"

"राज अउ पाट त ना मँगली,
मँगली तोहसे लुगरी एक बीता।
तौने बदे तरसाइ के अइलऽह,
का जनबे तोहै गाढ़े व मीता।
बीरन अउ बहिनी के सनेह में,
तर्क - वितर्क कहाँ कब जीता?
पारथ के समुझइहऽ कभी,
हरि राखऽ बचाइ के आपन गीता।

---

१ बिलखना २ पीछा किया ३ तिसका।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आँचि न लागइ देब तोहैं[1],
हमैं जौन परे कुलिअइँ[2] सहि लेबै।
पोंछिलऽ लोर सहात न बा,
न त चक्र सुदर्सन से कहि देबै।
धइ झकझोरब पूर अकास,
नछत्रन पाटि सबै महि देबै।
टूटि परैं रबि-चंद झरैं पर,
तोर दुलार झरै नहिं देबै[3]।

जौले[4] न आयल मैं रहली,
तबले[5] जस चाहे उड़उलेसि हाँसी।
तारू में दाँत जमा केकरे[6],
धरती केकरे रकते क पियासी।
भूंइ उलाटि अकास गिराइब,
के बहिनी बनये तोहैं दासी?
बैरी की छाती प कोदो दरऽ,
अबै जीयत बाटै दुआरिका बासी।

१ दुखी नहीं होने दूँगा (कहावत) २ सब ३ तुम्हारे दुलार में कमी नहीं आयेगी (कहावत) ४ जब तक ५ तब तक ६ किसके।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वारिका बेंचब जाइ कुबेर के,
ओकर सारी क गाँठि मगइबै।
चुके उहउ रधवा क निलंबर,
फेरि चोराइ तोहैं पहिरइबै।
जउ एतनेउँ प न हारे दुसासन,
अंतहुँ अचूक उपाइ लगइबै।
छोरि पितम्बर ढाँकब लाज,
तोहै बदे आजु दिगंबर होइबै।

देर तुहूँ कइलू बहिनी,
अगवें हमके कस नाहीं बोलवलू।
मोती टपा-टप चूवत बा,
अँखिया-पँखिया रतनारी बनवलू।
द्रौपदी बोली इहउ कहि दऽ,
'सग भाई के काही के ना गोहरवलू ?
लाज बचाइ ल तूं पहिले,
पिछवाँ तोहसे पुछबँ सरबवलू[1]।

१ स्नेह एवं अधिकार से भरी हुई एक देशज गाली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आन के भाई क कइके भरोस,
बनावल नात से मैं भरि पउली।
लाज रहै न रहै नहकै—
बिरना कहिके तोहके गोहरउली।
का इहै आस लगाइ जसोमति,
दूध पियाइ के साँड़ बनवलीं।
काहे न कंस के जेहल में—
देवकी धइके तोर मूड़ी दबउलीं।"

* * *

"रक्त के नाते भले देवकी
पर दूध के नाते जसोमति माता।
ई करजा भरिहैं न कभो,
भरपाई न भइलन माई क खाता।
जान में जान रहे जबले,
रखिहैं ठठरी में परान विधाता।
भूलब ना हम खून के नात से;
दून निबाहब नून क नाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राधे बदे तरसउँ दिन - राति,
हमैं डॅसली अस नेह सगाई।
भूलत गाइ न गोपी न गोप,
तोहै केतना परतोख[1] गिनाई।
जेतना बलराम के मैं मनली,
ओतना मनिहैं न सहोदर भाई।
का कइलीं देवकी जनमाइ के,
जाहिर भइलीं जसोमति माई।

रंग - बिरंगी भले दुनियाँ,
हमके रुचलीं बस पीत हरिद्रा।
नेह में चूक परे न कभी,
भलहूँ धनवान रहै कि दरिद्रा।
जइसे नछत्र सदा पहिले मृग[2]—
के गइले पर आवले अद्रा[3]।
मोरे बदे तइसइ बहिनी—
द्रौपदी पहिले तब पाछे सुभद्रा।"

१ प्रमाण २ मृगशिरा ३ आर्द्रा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का गिनती कुरुराज क बा,
हरि का, हरि पायक विश्व उलाटैं।
भारी हिमालय धइ के उखारइ,
हिन्द महासगरे बिच पाटै।
नेह के बन्धन बाँधि के द्रौपदी,
तेके तुकारि[1] के डाटत बाटै।
ना डटले का तनिउँ दुख बा,
दुख बा बहिनी बड़ रोवत बाटै।

*　　　*　　　*

का दिनवैं फेकरेली[2] सियारिनि,
काहे कुबोल सुनावत कागा।
भीषम अउ बिदरउ कहलें,
दुरजोधन कइलेसि बंस अभागा।
जौन कहे तवनै करिहैं,
किछु टेर भले गइ भूल से नागा।
बा मुँह बोली बड़ी दुलरइतिनि,[3]
लेइ बरदान रहे मुँह माँगा।

१ 'तुम कह कर बुलाना २ स्यारों के रोने की आवाज ३ दुलार वाली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

*   *   *

कान्ह कहैं "भरि आँखि लखऽ,
बहिनीकी गोहारि में भाई खड़ा बा।
आँचर फारि तुही बन्हलू'
अबहीं अंगुरी में निसान पड़ा बा।
भइली तोहार बड़ा रिनियाँ,
करजा बढ़लें बड़ सूद चढ़ा बा।
लाज त खाली बियाज में राखब,
मूर तोहार पड़ा क पड़ा बा।"

"जस कालि रहलिनि तस आजु बाटीं औरु,
रहिहैं भविष्य में भी स्वाभिमानी द्रौपदी।
अपने पहिरलिनि आनके भी दान कइलीं,
दानी तबउ रहलिनि अबउ दानी द्रौपदी।"
ऊपर भुजा उठाइ कहलेनि कान्ह, "आवऽ,
दासी बनि तोहके पियइहैं पानी द्रौपदी।
कइ दे उघारि त बखानी तोके वीर हम;
मोर-तोरे बीच ठाढ़ि बाटीं रानी द्रौपदी।

---

१ किसी समय कृष्ण की अंगुली में चोट आने पर द्रौपदी ने तत्काल अपनी सड़ी फाड़कर रक्त स्राव रोकने के लिए बाँध दिया था।

२ दुशासन के प्रति संबोधन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब तकि सकुनी-धरमराज खेललेनि,
अब हम द्रौपदी के धइ देली दाउँ पर।
हरले प अपने से खुद हम कहि देब,
दासी बनि जीवन बितावऽ जिनगानी भर।
महल में जाइ अब टहल बजावऽ कुलि,
अब दुरजोधन के घर जाइ पानी भर।
जीति जउ जाब तब नाहीं किछु चाहे हमैं,
माफी माँगि लिहऽ गिरि एनहींके पाउँ पर।

बड़-बड़ सूर एहँ बैठल देखात बाटें,
जोधन के बीच तोके बीर मानि लेब हम।
बल आजमाइ ले तैं, सुजस कमाइ ले तैं,
द्वारिका समेत रजधानी तोके देब हम।
छतिरी क हार-जीत हौ हमेस भुजबल,
सकुनी नियर[1] नाहीं जानीला फरेब हम।
अंगुरी अउ अंगुरी क पोर त दुलम[2] बाटै;
नख भी उघारि दे त हारी मानि लेब हम।

---

१ की तरह २ दुर्लभ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजु एहीं फरियावैं[1] परे,
सुनि बात दुसासन ले अभिमानी।
बाहँ मोटाइलि बा नहकै,
अथवा एहमें किछु कारिस्तानी[2]।
औरव[3] कौरव के बोलवाइ ले,
देखब आजु मैं तोर जवानी।
लोग लखैं जलुवा औ गँधारी में,
केकर दूध हौ, केकर पानी।

मारि के रियाज बड़ बहियाँ फुलउले बाटे,
आउ आजु मोसे तनी बल आजमाइ ले।
सकुनी क आपन औ कर्ण-दुरजोधन क,
सभवा के बीच कुलि अहक बुताइ ले।
हमसे भिड़ावैं[4] बदे संयम अपार चाहे,
किछु दिन जाइ और दूध-घिउ खाइ ले।
दोष मति दिहे फेरि बूड़ि जब बँस जाये,
डूबत बा नाव मन होइ त बचाइ ले।

---

१ निर्णय करना पड़ेगा २ करिश्मा ३ अन्य ४ शत्रुता लेने के लिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डूबल चाहले बंस क नावरि[1],
काही के नाहीं उबारत बाटे।
ना अबहीं किछु बा बिगड़ी,
बिगड़ी कस नाहीं सुधारत बाटे ?
ताकत बाटे बिनास खड़ा,
कस भीम क क्रोध उभारत बाटे ?
आन्हर बाप-मतारी क बोलु तें,
काहे बुढ़ाई बिगारत बाटे ?

श्रवण कुमार क इयाद मन कइले तें,
गरब-गुमान छोड़ि चलते ओनइ[2] के।
पढ़ले त होवे इतिहास अस कहले बा,
मरि गइलें कीरति सराहनीय कइ के।
अन्हरी अउ अन्हरा के घर में सपूत होइ,
तीरथ कराइ देलें कवँरी[3] में धइ के।
बाकी तोन्हनें त धृतराष्ट्र क कपूत बनि,
नरके में जाबे साथ अन्हरउ के लेइके।

१ नाव २ झुककर ३ काँवरि 'वहँगी की तरह पवित्र जल ढोने के लिए बनाया जाता है।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओहर दुसासन बा एहर से कान्ह बाटें,
बीच द्रौपदी क धोती घिचत-बढ़त बा।
कबहूँ न भयल न होई अस अजगुत,
देखतउ बाटैं सब बैठल सुनत बा।
सरियउ बढ़त बाटै, लजियउ बचत बाटै,
कान्ह अउ दुसासन में बतियउ चलत बा।
एहरउ से आवलें त ओहरउ से आवले,
चतुर्दिक धावलें फिरिहिरी नचत बा।

नाचत की बेरियाँ एनहीं[1],
कलिया[2] के फने पर कत्थक कइलें।
नेह में गोपिन के अपने,
छछिया भरि छाछ प नाच देखइलें।
नान्हे में नृत्य देखावइ बदे,
ओखरी में सटाइ के बान्हल गइलें[3]।
बैल बुढ़ान हराई[4] न भूललि[3]
द्रौपदी खातिर नर्तक भइलें।

---

१ ये ही २ कालिय नाग ३ "दाम्माथो लूखले कृष्णो गोप स्त्रीभिश्चबंधित:" (महाभारत) तब गोपांगनाओं ने कृष्ण को एक रस्सी से ओखली में बांध दिया ४ हल चलने से जो निशान बनता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवत खींचत धावत खींचत,
माथ उठाइ ओनवत खींचैं।
कर्ण की ओरी लखेला कभी
दुरजोधन के गोहरावत खींचैं।
आन्हर बाप न देखि सकइ
बिदरउके भी ओठ बिरावत[1] खींचैं।
पाकलि मोछि पितामह कै,
उजरी में सियाही लगावत खींचैं।

* * *

सारी बहुआरी[2] बाटैं विविध किनारी बाटैं,
सलमा सितारी बेल बूटी धूप-छहियाँ।
फीक बाटैं, गाढ़ बाटैं, लागल पहाड़ बाटैं,
मखमली पाढ़ बा सिलिक मखनहियाँ।
रघवा जउ होत आजु आगे ठाढ़ि होइ जात,
पूछि लेत कान्ह से पकड़ि दूनउँ बहियाँ।
मोरे आगे कमरी तूँ ओढ़ि के चरउलऽ गाइ,
बोलऽ कान्ह सारी कहाँ पउलऽ रेसमहियाँ[3]।

---

१ ओठ बिचका कर चिढ़ाना २ नई बधू की सारी ३ रेशमी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूअँरि, झाँवरि, ऊजरि कारी,
सुआ पंखिया, मिरचाई, मयूरी।
केसरिया, ककरेजी, गुलाबी,
हरी, गेरुई, जोगिया अउ सिंदूरी
ई लदनी बहिनी के बदे,
धोतिया हमरी चढ़लऽ लेइ दूरी।
ई बरताव जउ गोपिन से करतऽ,
पउतऽ मोहँ माँगी मजूरी।

धानी के ऊपर बा असमानी,
ओहू पर बैंगनी नीली देखाइल।
रामरजी, नवरंगी कभी,
जरदी, हरदी बहुरंगी जनाइल।
ई पुरुषारथ देखत खेतन में,
सरसों फुलवा मुसुकाइल।
अउर सबै रंग दाबत - दूबत,
अंबर चीरि पितंबर आइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊपराँ से देखि सासु[1] आँसु पोछि सोचलिनि,
भैल विसवास मन बचि गइलीं रनियाँ।
कौन-कौन रंग बाटै तोपे अंग-अंग बाटै,
एही में छिपलि बाटै धधकी अगिनियाँ।
देस अउ देसंतर क लोग सब जानि गइलें,
बड़ सारी धइले बाटै कान्ह क बहिनियाँ।
अदलि - बदलि देलीं, पहिरलीं छोड़ि देलीं
द्रौपदी लगलीं गवने क दुलहिनियाँ।

एक तउ इन्द्र दूजे बज्र हाथ लेइ ले लें,
कबउँ नाहीं दबलि बा अउर अब दहकी।
अब काउ करे केउ, अब काउ धरे केउ,
बिरना के देखि देखऽ बाटै बड़ सहकी।
लागत बा नाहीं कतउं हाट में बिकाये अब,
कुलि इहैं पहिरे अउर सब अहकी[2]।
जौने करिखनवाँ में सरिया बनली अस,
तौने क जनात बाटै इहै एक गहँकी[3]।

१ कुन्ती २ तरसेगी ३ ग्राहक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निरभय, भयहीन, निरदुंद ठाढ़ि भइली,
देखतइ-देखत धधाइ गइलीं द्रौपदी।
अदलि-बदलि गेल समय के हेर-फेर,
अब सब बिपति भुलाइ गइलीं द्रौपदी।
फटही लुगरिया के तरसति रहलीं पै,
भाई के प्रताप इतिराइ गइलीं द्रौपदी।
सारी पर सारी पर सारी पर सारी देखि
सरिया के मारे उबियाइ गइलीं द्रौपदी।

ऊपर से हरि सारी बढ़ावलें,
ज्यों झरना झरलें बहुरंगा।
चीर मुड़ै मुड़ि के सिकुड़ै,
नभ बीच बनै बड़ छोट तरंगा।
ई छबि देखि के डाह के मारे,
मसान से दौड़ल बा सिव नंगा।
संकर कौन नया झटकारत,
रोकत बा लटकारी में गंगा?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोवलें संकर का करउँ राम;
नई कोई गंग हिलोरत आवें।
संभु नया उपजा धरती पर,
माथे महा जलरासि उठावें।
ना सुधि साँप क, ना सुधि आप क,
खोह में पारबती के लुकावें।
गंग-तरंग जटा में छिपावलें,
आइ के कौनउँ चोरावें न पावें।

के विजयी रन हारत के,
फरियात न जानें उहै बम भोला।
छोर दुसासन ओर गहे हरि,
बीच बेचारी क काँपत चोला।
द्रौपदी आजु बनी गिरि मंदर,
साड़ी लगै जस साँप-सँपोला।
राकस - देव जुटे फेरिसे,
फेरिसे जनु सागर मंथन होला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साँवर कान्ह क गोर हिया,
पर गोर दुसासन कै मन काला।
ए[1] झुकि जालें त[2] खींचत ऊ[3]
झुकि सारी बढ़उले प ऊ झुकि जाला।
ना केउ हारत, लोग निहारत,
देखत ई छबि अइस[4] जनाला।
बादर जूझल बीजुरी से कभी,
बादर से बिजुरी लड़ि जाला।

खींचत बइठत बइठत खींचत,
खींचत बइठि नचै चहुं फेरा।
साड़ी चुकै ओकरे[5] पहिले,
बनि जात रे घाघर घूम घरेरा।
धोती धरे थकि ठाढ़ दुसासन,
अइसन लागत बा एहि बेरा।
पानी में गइ मछरी सर्र से,
कर जाल लिहे पछतात मछेरा।

१. यह, २. जब, ३. वह, ४. ऐसी, ५. उसके।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भागै इहाँ कभी भागै उहाँ,
दुबकै हरिनी अस नारि बेचारी।
छोरैं दुसासन मानत ना,
हरि आपु रहे पहिरावत सारी।
अइसे में राधे लखैं सपना,
फेरि चीर चोरउलें कदंब की डारी।
लाज रखैं कहीं, लाज लखैं कहीं,
के गति जानै तोहार मुरारी।

* * *

एहँ सारी बढ़उलेनि कान्ह उहाँ,
ब्रजवासिन के सगुना होइ गइलें।
सुभ भइलेनि मातु जसोमति के तन–
नंद के भी सपना होइ गइलें।
बतिया अपुनें कढ़लीं कहलीं–
जब सूल पुरान घना होइ गइलें।
घर काही बदे अइबा सुगना
अब तउ तोहरे पखना[1] होइ गइलें।

---

१. पंख।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नान्हे क बाल सखा जुटलें,
कहलें हरि ना भेजलें कबउँ पाती।
तौले जसोमति बेगि से अइलिनि,
बूढ़ सरीर तबउ बलमाती।
हाथ उठाइ कहै लगलीं,
रन में चमकइ कतउँ बंस क बाती।
जानउँ न काहे बुढ़ाई में भी,
दुधवा भरि आयल रे मोरि छाती।

नंद बबा कहैं काहे न दूध–
भरैं महतारी त हौ महतारी।
ब्रह्म हमार भी बोलत बा,
अजगूत कतउँ कइलें बनवारी।
पूत तोहार कहीं निहचै,
दुखियारी के लागल होइहैं गोहारी।
भोर में मैं सपना देखलेउँ,
कि अकास छुवै बढ़ि मोछ हमारी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देले प्रकास जहाँ कुल दीप,
अजोर तहाँ न कबउँ अन्हियारी ।
पूत - सपूत जहाँ भइलें तहँ,
बाप दुखी न दुखी महतारी ।
मारे सनेह के नंद जसोमति,
कै एतनी देहियाँ भईं भारी ।
ओ न अँटें ओनकी अंकवारी में,
ओ न अँटें ओनकी अंकवारी ।

*   *   *

यज्ञ कुमारी तनी मुसुकइलिनि,
लाजे मरें सरगे बिच रंभा ।
दाँते दबावत वा अंगुरी केउ,
भैल न अइसन होले अचंभा ।
चूर हजारन हाथिन कै बल,
हाँफत बाहुँ क चूकल दंभा ।
जाँघन बाँहिन कै बल हारल,
भइलें सबै जस पाथर खंभा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कान्ह कहैं मन धीर धरऽ
दुख कै दिन गइलन अइलन आछे[1]।
लागलि आजु बजारि भले,
कुरुखेत में ना केउ पूछे न ताछे[2]।
मारि के ताल अउ लेइके गदा,
रन भीम खड़ा कछनी जब काछे।
सौ-सौ पतोहू बनी विधवा,
धृतराष्ट्र के रोइहैं आगे औ पाछे।

धर्म धुरंधर[3] जीतिहैं रे,
कुरुखेत में कौरव हारत देखू।
बीरन के किछु सूझिहैं ना,
रन जूझिहैं धूरि में गारत देखू।
हे बहिनी भरि आँखिन तूं,
एहि भारत में महभारत देखू।
अउरो सुनऽ धृतराष्ट्र के सउ-सउ,
पिंड अकेलइँ पारत देखू।

१. अनेक, २. जांचना, ३. युधिष्ठिर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

*　　　　*　　　　*

हाथ उठउले बिकोदर बोललें,
मोसे भिड़इ अस के मरदा बा।
पानी बचा बड़ भागि से द्रौपदी,
भागि से आजु बचा परदा बा।
कृष्ण लगावइं पार सबै,
हमरी बहियाँ पर भार लदा बा।
सौ-सौ कपालन कै किरिया,
हमरी बस एक गदा से बदा[1] बा।

छत्री सबै प्रन मोर सुनैं,
द्रौपदी दिनवाँ तुहऊँ अब जोहू।
आजु तहूँ सुनिले अन्हरा,
करबै विधवा सब तोर पतोहू।
माई गंधारी धियान धरऽ
जवने के तूं तेल-फुलेलन बोहू[2]।
फारि के छाती दुसासन कै,
चुरुआ[3]-चुरुआ हम पीयब लोहू।*

१. पूर्व निश्चित, २. तरबतर किया, ३. चुल्लू।
* अस्य पापस्य दुर्बुद्धेर्भारताय सदस्य च।
न पिबेयं बलाद् वक्षोभित्वा,चेद रुधिरं युधि।—महाभारत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूनो कान पारि धृतराष्ट्र सुनि लेहु,
तोर जाई जनमल रन- सागर में बोरि देब।
आपन परन जउ पूर नाहीं करबै त-
परलोक बीच सरगे क राह छोड़ि देब।
लाज़-बीज किछु दुरजोधन के नाहीं बाटै,
लातन से एकर कपार हम फोरि देब।
जौन जाँघि खोलि द्रौपदी के ई देखवले बा,
मारि के गदा से उहै जाँघि हम तोरि देब।

एक लाख पूत सवालाख नाति रावन के,
तवने क निरबंस कइलें दुइ तपसी।
पिंड अउ पानी क देवाल नाहीं छोड़लेनि,
सुनि तहूं लेबे सत पूतन क बपसी[1]।
करण-दुसासन क अउर दुरजोधन क,
गड़ल करेजे दुरबाद बनि अंकसी[2]।
तोर सउपूत कौने गिनती में गिनती बा,
एक भीम काफी बाटै एकउ नाहीं बकसी[3]।

१. बाप, २. कँटिया, ३. छोड़ेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

*   *   *

ऩ्हने किनारे क बिरिछ बाटें, सावन के—
नदिया समान तट तोरि बहऽ बहिनी।
हारल दुसासन तू जीति गइलू, जीति गइलू,
सहलू बहुत अब मति सहऽ बहिनी।
तोरे बदे सब किछु झेलि जाब छाती पर,
निरभय बनऽ मति मौन रहऽ बहिनी।
आगे-आगे चलऽ हम पीछे-पीछे बाटी तोरे
जेसे जौन चाहऽ तेसे तौन कहऽ बहिनी।

द्रौपदी के जोगवइ हरि, फूल—
झुराइ न पावइ रे गजरा कऽ।
एनहूं करिया, ओनहूं करिया,
बिटिया-बेटवा बदरी-बदरा कऽ।
डोललीं यज्ञ कुमारी जहां,
तहं छाहँ करें पियरे चदरा कऽ।
धन्नि पितंबर भइलन रे,
जब लागल दाग दुखी कजरा कऽ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथ उठउले कहैं द्रोपदी,
हरले तैं दुसासन आगे रहइ दे।
जूंठि हमारि पड़ी लुगरी,[1]
लेइजो अपनी मेहरारू के देइ दे।
कौन संकोच दयादन[2] से,
अब बात पड़े पर बात कहइ दे।
तोरे बले न घटे सड़िया,
अपने बपवा अन्हरा के पठइ दे।

कौनि के न धइ गइलन पांडु,
कि पांडव देइहैं दाउँ लगाई।
ना दुरजोधन कै अधिकार,
न तउ धृतराष्ट्र का बाटइ कमाई।
ई धोतिया मोरे नइहर से,
भरि गाड़ी लदाइ के आयल भाई।
चाही त देइं तोरी मेहरी[3] के,
मैं चाही त फारी आ चाही लुटाई।

१. पुरानी धोती, २. पट्टीदार, ३. स्त्री।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

*　　　　*　　　　*

द्वारिका से अरराइ के अइलन,
ना गरुड़उ पउलें परछाईं।
बादर चीरत, अम्बर फारत,
ठेलत चंद, रबी बरियाई।
थाकलि द्रौपदी के पिछवाँ
पग धीरे धरलें न ये अकुलाईं।
आवत की अन्हिया रहले,
अब डोललें मन्द बयारि कि नाईं।

द्रौपदी पितामह के आगे ठाढ़ि बोललीं कि,
आपन तूँ बुद्धि और मन तनी देखि लऽ।
कौने जप-तप पर अस परिवार पउलऽ,
नाती, पोता और परिजन तनी देखि लऽ।
कौन दुरगति मोर भइल सभा के बीच,
अपने कुटुंब क पतन तनी देखि लऽ।
हम ससुरारि खूब देखि लेली, तुहूँ—
मोरे नैहर से आइबा बिरन तनी देखि लऽ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाप बचा धृतराष्ट्र से, धम—
धुरन्धर से बचा भारत बाटै।
कृष्ण से बा बिसवास मही पर,
पारथ से पुरुषारथ बाटै।
बीर भले बनै द्रोण, भविष्य में,
भीमइं[1] से महभारत बाटै।
लेकिन भीषम बाबा धरा पर,
जन्म तोहार अकारथ बाटै।

भारी भरोस रहा गुरु से,
पहिले दुरजोधन के समुझइहैं।
जउ एतनेउँ प न माने दुसासन,
बान-सरासन तानि के अइहैं।
मैं सोचले रहलिउँ मन में,
गुरुदेव से पाप सहा नहिं जइहैं।
ऊजरि बा पगड़ी मथवा पर,
आपन पाग उतारि ओढ़इहैं।

---

1. भीम ही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पीर पराई तूं का जनबऽ;
निरबंस न बा तोहरी भगिया में।
आन[1] क खेती भले उजरै,
हरियाली रहै अपनी बगिया में।
सिस्य बहू केतनी, तोहरे—
जियतैं[2] कोइला दरिहैं मँगिया में।
ना धोवले छुटिहैं दगिया,
गुरुदेव लगैं अगिया, पगिया में।

राजगुरू रजिया रजलऽ[3] तू,
हराम में खइलऽ मलाई से पूआ।
जौन पढ़ाई ले तौन पढ़ै,
तोरे चेलन से भल पोसल[4] सूआ।
एकउ सिस्य न नीमन[5] रे,
गरभइ में गुरु अस काहे न मूआ।
आन क नारि उघारै केहू,
केहु आपनि नारि लेइ खेलत जूआ।

---

१. अन्य २. जीते ही ३. राज्य भोग करना ४. पालतू ५ अच्छा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे-आगे बहिनि त पीछे-पीछे भाई बाटें;
पहुंचलि जाइ दुरजोधन अगाड़ी बा।
बाघिनि समान तड़पलि, फेरि गरजलि,
लाल-लाल नैन तनिउँ मन में न हारी बा।
लोग सब देखि रहे अब निरदुंद ठाढ़ि,
एक सइ भाइन के आगे एक नारी बा।
सउ-सउ चइला से बनलि चिता के बीच,
पहूंचलि एक धधकति चिनगारी बा।

तोन्हने[1] के आयु क मेटाइ गैल रेख अब,
विधि के संजोग किछु काल अभी बाकी बा।
धनुहीं क टनकार, बानन क सनकार,
भुज दंड, जांघन क ताल अभी बाकी बा।
भले घर बायन बटायल बा मोरे जान,
भारत क बड़का बवाल अभी बाकी बा।
अबहीं त नैहरे से एक भाई आयल बा,
द्वारिका अउ कुलि पंचाल अभी बाकी बा।

---

१. तुम सब।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाटै भरोस बड़ा बिरना पर,
कइले बिना प्रन मानब नाहीं।
केस घसीटल गइलन मोर,
तबउ अस ठान का ठानब नाहीं ?
लोहुन में दुरजोधन के—,
जबले केंसिया हम सानब नाहीं।
ई बरवा, तरवा छुइहैं—
तबले जुड़वा हम बान्हब नाहीं।*

---

* महाभारत में भीम द्वारा दुजोधन की जाँघ तोड़ने तथा उसके शिर पर पादप्रहार करने की प्रतिज्ञा का वर्णन तो आया है किन्तु द्रौपदी के रक्त से खुले हुए केशों के बाँधने की चर्चा नहीं आई है। जबकि उसे कई श्लोकों में मुक्त केशी कहा गया है। महासमर के अन्तिम समय में व्यास सरोवर के तट पर दुर्योधन और भीम का गदा युद्ध होता है, वहाँ भीम अपनी दोनों प्रतिज्ञाओं को पूर्ण करते हैं, तव भी व्यास जी दुर्योधन के रक्त द्वारा द्रौपदी के मुक्त केशों के विन्यास की चर्चा नहीं करते जबकि लोक जीवन में द्रौपदी की उक्त प्रतिज्ञा खूब प्रचलित है।

वञ्चद्भुज भ्रमित चण्ड गदाभिघात
सञ्चूर्णितोरु युगलस्य सुयोधनस्य
स्त्यानाणविद्ध धन शोणित शोषणासिः
उत्तस्मयिष्यति कचास्तव देवि ? भीमः–वेणी संहार नाटक

हे देवि ! चंचल भुजाओं में घूमती प्रचंड गदा के प्रहार से सुयोधन की जंघाओं को चूर्ण करके गाढ़े रक्त से लाल अपने दोनों हाथों में तुम्हरे केशों का श्रृङ्गार करूँगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

*   *   *

गाड़ी भरा परिवार अकारथ
एक से एक महारथ मोरे।
ना मुरलें झुकलें न कबउँ,
रन भूइं में जे इति से अथ जोरे।
पांडु पिता सरगे से निहारि लऽ,
राउर पूत सबै कुल बोरे।
होत न अइसन बीरन आजु—
त का गति होत पतोहू क तोरे।

गुरु जी के आगे गइली मुड़िया ओनाइ लेलें,
बोलब त दूरि तनिउँ उपराँ न तकलें।
भीषम अउ बिदुर दुखित भइलें आपुस में,
एक दुसरे के अंकवारि भरि भेंटलें।
बाबा जब रोवलें त चाचा आँसु पोंछलेंनि।
चाचा जब रोवलें त बाबा आँसु पोंछलें।
हम जब रोवली त रोवतै रहि गइंली,
दूनों जने मौन भइलें किछु नाहीं बोललें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाप से बाढ़ि तोहैं मनली,
ससुरू मोर पांडु पिता मरि गइले।
ना रोकलऽ तू कपूतन के,
धृतराष्ट्र तोरे मन पाप समइलें।
लाज पतोहू क जे लखिहैं,
तिनके बधे पाप न राम बतइलें
जानि परेला तबैं अन्हरू,
पहिलें विधिना तोहै आन्हर कइलें।

देश अउ देसन्तर क जुटल नरेस यहँ,
मोरे जान सबही क पाप उधिरइलें।
भारत में अब महभारत जरूर होई,
देसवा के उपराँ कुकाल चढ़ि गइलें।
सब कर मति-गति मरि गइलीं एक संग,
केहू जन ताल ठोंकि ठाढ़ नाहीं भइलें।
एक धृतराष्ट्र बिनु अँखिया क रहलेनि,
हाइ राम सब धतराष्ट्र बनि गइलें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

भितराँ से धाइ आइ गइलीं गंधारी तबै,
कहलीं कि "पगिया क दगिया धोवाइ लऽ।
सती के सरपले से जरि-मरि जाये सब,
अगिनि धधाइलि बा चाहऽ त बुझाइ लऽ।
कृष्ण के कृपा से लाज द्रौपदी क बचि गइली,
सारी वही जात बाटैं, आधी त बचाइ लऽ।
अपने कपूतन क जिनगी जउ चाहऽ नाथ,
रूसलि पतोहु बाटै उठि के मनाइ लऽ।"

"सौ-सौ पतोहुन के पोसलू,
द्रौपदी बस भइली पहाड़ हो मइया।
पुत्र वधू अस जउ जनतिउ,
जस गावत देस में लोग-लुगइया।
तोरे कपूतन कै करनी,
सब जानत बा मोर बीरन भइया।
सासु गंधारी तोहै बदे ना,
छोड़िहैं अब पिंड अउ पानी देवइया।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्रौपदी जौ चहतिनि ओही छन कुलि बैंर,
गिरि के समाइ जात मौत वाली खाईं में।
बिरना से कहि देतीं, चक्र गहि लेत यदि,
सवइ विपति जरि जात एक दाईं में।
बिदुर-गंधारी दूनो तबले संभारि ले लें,
आइ गैल बुद्धि किछु कुरूबंस साईं में।
बोली धृतराष्ट्र क परलि द्रौपदी के कान,
बून भरि पानी परि गैल भरसाईं में।

धृतराष्ट्र कहलेनि "सुनि ले पतोहु मोर,
जौन किछु भैल बेटी तवन भुलाइ दे।
कर्ण, दुरजोधन, दुसासन सवइ मिलि,
भरलि सभा में जौन कइलें तीन जाइ दे।
सत के प्रताप से त रबि छबि थोर होले,
एन्हने के क्रोध के अगिन में न जाइ दे।
मोर मन तोहै बरदान देवैं चाहले,
तें कौन बरदान लेबे बिटिया बताइ दे।"

१. वार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

*　　　*　　　*

"धर्मराज, भीम अउर पारथ, नकुल,
सहदेव सब मुक्त होइ जांइ दास-भाव से ।
बाप के समान आप, राउर पतोहु हम,
जौन किछु बाटै सब रउरी प्रभाव से ।
पांडव क भाग सब पांडव के पास रहै,
इन्द्रप्रस्थ चलैं सब पति मोर ताव से ।
देलऽ बरदान नाहीं, मोरे जान एक बार,
पार भैल परिवार टूटी-फूटी नाव से ।"

ऊपर भुजा उठाइ बोललें नरेस किछु,
"काल राति चोरि के निकालि देलीं परभात ।"
केहू-केहू कहलेसि "द्रौपदी ई नाहीं बाटीं,
मूरति छमा क ठाढ़ि बाटै अस बा जनात ।
चक्र चलि जात आजु परलय मचि जात,
किसुन न टारि पउतें कबउँ किसुना क बात ।
द्रौपदी बचाइ लेलीं ना त आजु लुटि जात,
अन्हरा के एक सउ पतोहुन क अहिवात ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहू अस कहलेसि "सनमान पावें बदे,
अन्हरा चलाँक बरदान अब देत बा।
एही के कुमतिया से सब किछु भयल बा,
बहुतें चतुर बाटें जस अब लेत बा।
मन में दया न बाटें, तनिकउ हया न बाटें,
उँचका सिंहासन प बैठल परेत बा।
बाकी किछु दिन बदे राढ़ि भले टरि गैल,
अंत निरणय बदे खाली कुरुखेत बा"।

धृतराष्ट्र कहलेनि, "बहू तू समर्थ बाटू,
एन्हने के छमा जोग बेटी मन मानि लऽ।
एतनउँ देहले से भरल न मोर मन,
और किछु देब साँच बात मोर जानि लऽ।
तोरे सुभ करम से हम गदगद बाटी,
कहले से आजु हमहूं के सनमानि लऽ।
जौन भगलू ह हम एवमस्तू कहि देली,
बाकी बहू अउर बरदान किछु माँगि लऽ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2..

"धरम युधिष्ठिर में थित रहै महराज,
विपति में सहदेव, नकुल के सेइ लेब।
भीम हाथ गदा रहै, धनु रहै पारथ के,
रेत में भी नाव पड़ले प हम खेइ लेब।
कान्ह क कृपा रहै बरोबर जौ मोरे पर,
कइ के समर प्रतिसोध सब लेइ लेब।
बाकी तबै बेर बुझी जब दुरजोधन के,
रकत से बार-बार बार हम भेंइ लेबां। -

आंचर पसारि एक विनती बा देवन से,
अरज-गरज अस कहबइ फिर ना।
नारिन क अस दुरगति जउ सराहे जग,
धरती पताल चली जाइ रहै थिर ना।
बन, उपबन, नद-नार नभ डाँकि अइलें,
जुग-जुग जीयइं माई जसुदा क हिरना।
बैरी जेके राम दुरजोधन समान दिहऽ,
ओक तू जरूर हिहऽ कान्ह अस बिरना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

*　　　*　　　*

"झूमल दूध जसोमति कँ,
महतारी क कोखि तू सारथ कइलऽ।
बीरन कँ बहियाँ बलि जाउं,
दुसासन के रन आरत कइलऽ।
आजु हजारन हाथिन कै बल,
बैरी की बाहीं क गारत कइलऽ।
पांडव कालि सुरू करिहैं,
अजुअइ तू सुरू महभारत कइलऽ।

अइलऽ चला भल कइलऽ बड़ा,
न त का गति होत हमार कन्हइया,
जौं ले न आयल तू रहलऽ।
एन्हने जनलें हमैं धाने क पइया।
का तोहैं देई बड़ी दुखिया हम,
जइसे कसाई के हाथे क गइया।
बाहँ अउ जाँघि क जोर बढ़ै,
रन में, बन में तू सुखी रहऽ भइया।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

*　　*　　*

"देन जउ चाहलू तू बरदान त,
दऽ अब माँगत बाटइं काँधा।
जौने बदे तरसे बहुतै बड़,
नेम, कथा, व्रत, संयम साधा।
माई जसोमति नंद पिता,
फेरि ग्वाल सखा मिलें ना परै बाधा।
राधा मिलें जिनगी भरि के,
बिनु राधा के जीवन लागत आधा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.